शाने औलिया व ज़ियारते कुबूर

(औ़रतों का क़ब्रों की ज़ियारत करना जाइज़ है)

(नियाज़ व फ़ातिहा दिलाना सुन्नत है)

मुअ़ल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

शाने औलिया

व

ज़ियारते कुबूर

मुअल्लिफ़

डॉ०-आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

09897626182

© जुमला हुक़ूक़ नाशिर के लिये महफ़ूज़ हैं

नाम किताब–शाने औलिया व ज़ियारते कुबूर

मुअ़ल्लिफ़–डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

सने इशाअ़त–जनवरी– 2020

कम्पोज़िंग–जुनैद अ़ली सफ़वी &
जै़नुल आ़बदीन सफ़वी

नाशिर–सइयद ज़हीरउद्दीन साहब

क़ीमत– 30/- रूपये

–: मिलने के पते :–

मदार बुक डिपो
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

जावेद बुक सेलर
करहल (मैनपुरी)
09634447000

अनवार उर्दू बुक डिपो
बिसात खाना मैनपुरी
09319086703

उर्दू बुक हाउस
तलाक महल (कानपुर)
09389837386,09559032415

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

न०शुमार सफ़हा

01–ह़म्द......................................05

02–तम्हीद....................................07

03–शाने औलिया क़ुरान की रोशनी में.....10

04–औलिया से करामतों का ज़हूर होता है.24

05–करामाते सहाबा–किराम.................32

06–औलिया–अल्लाह ज़िन्दा हैं..............36

07–शाने औलिया अहादीस की रोशनी में..43

08–ख़्वातीन का ज़ियारते क़ुबूर............ 56

09–एक एतराज़ और उसका जवाब....... 65

10–नियाज़ व फ़ातिहा दिलाना सुन्नत है... 68

11–बुज़ुर्गों के हाथ पाँव चूमना जाइज़ है...79

786/92

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सइयेआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादियालहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ०

तमाम खूबियाँ और तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत व मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरूदो सलाम हो रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम पर जो ज़ाहिर व बातिन में तइयब व ताहिर हैं जो तमाम ऐ़बो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तअ़ाला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो आ़लम में उजाला है अल्लाह तअ़ाला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर रोज़े क़यामत प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तअ़ाला ने अपने हबीब को

औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बिया-किराम अलैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुज़ूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है।

और रहमत व सलामती हो आपके अहले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो रोज़े क़यामत मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढ़ाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्हरात और आपकी आल व असहाव और तमाम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-इज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तआला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

-: तम्हीद :-

अल्लाह तबारक व तआ़ला का शुक्र और एहसान है कि जिसकी तौफ़ीक़ से मैं इस किताब की तालीफ़ कर रहा हूँ फ़िरक़ों और फ़ित्नो के इस दौर में चन्द लाइल्म मौलवियों ने उ़म्मते मुस्लिमा के दरमियान जाइज़ व मुबाह उमूर पर नाजाइज़ व हराम का फ़तवा नाफ़िज़ कर इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार और अजीब कशमकश का माहौल बपा कर रखा है इस किताब को लिखने का अहम मक़सद व सबब ये है कि उन उमूर पर उम्मते मुस्लिमा की इस्लाह हो जाये और वो अजीब कशमकश व बद अक़ीदगी और गुमराही से निजात हासिल कर सकें और उनके ईमान व अ़क़ाइद में पुख़्तगी के साथ-साथ इल्म में इज़ाफ़ा हो ताकि वो हक़ व बातिल में इम्तियाज़ कर सकें क्योंकि बाज़ फिरक़ा परस्त मौलवी अपनी लाइल्मी व कम अ़क़्ली और बे हिकमती और बद अ़क़ीदगी के बाइस बाज़ वाजिब व सुन्नत और जाइज़ उमूर को नाजाइज़ व हराम कहते हैं और ऐसे मौलवी कुरान व हदीस तो पढ़ते हैं मगर उनको समझने की सलाहियत व क़ाबलियत उनके अन्दर नहीं पाई जाती फिर वो अपनी अ़क़्ल और ज़ाती राय पर मबनी बे बुनियादी फ़तवा नाफ़िज़ कर देते हैं और उम्मते मुस्लिमा में इख़्तिलाफ व इन्तिशार का माहौल बपा कर देते हैं।

जबकि हक़ीक़त ये है कि दीनी उमूर व अहकामे शरीअ़त और फ़िक़ई मसाइल किसी अ़क़्ल या ज़ाती राय के मोहताज नहीं हैं बल्कि तमाम मसाइल कुरान व हदीस के मोहताज हैं यानी किसी चीज़ को जाइज़ या नाजाइज़ या हराम साबित करने के लिये कुरान व हदीस की दरकार होती है मगर अफ़सोस जैसा कि आजकल के मौलवी अपनी तबियत और अ़क़्ल और ज़ाती

क़ियास के मुताबिक़ शरई अहकामात जो कि जाइज़ हैं उनको नाजाइज़ व हराम क़रार देते हैं और वो ख़ुद भी गुमराह हैं और उ़म्मते मुस्लिमा को भी गुमराह कर रहे हैं।

चुनांचा क़ुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है-

(इस तरह) अल्लाह तआ़ला एक ही बात के ज़रिये बहुत से लोगों को गुमराह ठहराता है और बहुत से लोगों को हिदायत देता है। (सू०-बक़राह-26)

मौजूदा दौरे फ़ितन में उ़ल्मा व मुबल्लिग़ीन की बाज़ जमाअ़तें अपनी कम इ़ल्मी और जाहिलाना सोच और बद-ज़हनियती और अपनी मनमानी के बाइस उ़म्मते मुस्लिमा के इत्तेहाद को मुन्तशिर कर रहीं हैं उनके पास इ़ल्म के नाम पर सिर्फ़ तज़किरे, मुनाज़रे, फ़तवे, और अशआ़र से मुज़य्यन बातें और तनक़ीदें हैं और वो कुरआनी आयात और हदीसे मुबारका से जो मौक़िफ़ साबित करना चाहते हैं वो साबित नहीं कर पाते क्योंकि वो कुरान और हदीस तो पढ़ते हैं लेकिन उसको समझने की सलाहियत नहीं रखते और वो कुरान की आयात की ग़लत तफ़्सीर और अहादीस मुबारका की ग़लत शरह व तौज़ीह करके जाइज़ शैः को बिदअ़त और हराम साबित करते हैं

और उनके पास फ़तवों के कारख़ाने हैं जिनसे वो फ़तवों का कारोबार करते हैं और फ़तवों के ज़रिये जिसे चाहे उसे काफ़िर बना देते हैं और जिसे चाहे इस्लाम से ख़ारिज़ कर देते हैं हालांकि अगर दीन इस्लाम को सही तरीक़े से पेश किया जाये तो जदीद नस्लों के ईमान व अक़ाइद को ख़राब होने से बचाया जा सकता है और बाज़ उ़ल्मा व मुबल्लिग़ीन की जमाअ़तें लोगों को दीन की तरफ़ राग़िब करने की बजाए मज़हब से बेज़ारी और गुमराही को फ़रोग़ दे रही हैं और कुरान व अहादीस से साबित जाइज़ व मुबाह कामों पर नाजाइज़ व हराम का फ़तवा नाफ़िज़ कर

रही हैं जैसे– ‘‘मज़ामीर के साथ क़व्वाली’’ ‘‘ताज़ियादारी’’ ‘‘हुज़ूर का मीलाद मनाना’’ ‘‘अम्बिया व औलिया को वसीला बनाना’’ ‘‘औलिया अल्लाह के मुक़द्दस मज़ारात की हाज़िरी और ज़ियारत करना और ख़्वातीन का ज़ियारते कुबूर करना और नियाज़ व फ़ातिहा दिलाना और नेक सालिहीन बुज़ुर्गों के हाथ पाँव चूमना बग़ैराह उमूर पर एतराज़ करते हैं और नाजाइज़ व हराम का फ़तवा देते हैं अल्हम्दु लिल्लाह मैंने इन मज़कूरा तमाम मौज़ूआ़त पर लगने वाले तमाम एतराज़ात की कुरान व हदीस की रोशनी व दलाइल से अपनी तालीफ़ात में नफ़ी की है और मेरी तमाम तालीफ़ात मन्ज़रे आम पर हैं जिनका मुताअ़ला किया जा सकता है

और इस किताब में मैने ख़्वातीन का ज़ियारते कुबूर और औलिया अल्लाह मजा़रात की हाजिरी और ज़ियारत करना और नियाज़ व फ़ातिहा दिलाना और बुज़ुर्गों के हाथ पाँव चूमना बग़ैराह उ़मूर पर कुरान व अहादीस की रोशनी में इन मज़कूरा उ़मूर को जाइज़ के ज़ुमरे में शामिल किया है अल्लाह तबारक व तआ़ला से दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला अपने महबूब सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के सद्क़े व तुफ़ैल इस फ़क़ीर की इस तालीफ़ व कोशिश को अपनी पाक व मुक़द्दस बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और इस किताब को उम्मते मुस्लिमा के लिये बाइसे– ख़ैर और इस्लाह का ज़रिया बनाये आमीन–

फ़क़ीर

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी
09897626182

-: शाने औलिया (कुरान की रोशनी में) :-

वली का लुग़वी माअ़ना है- 1-दोस्त, 2-क़रीब, 3-मददगार, 4-वारिस, 5-माअ़बूद, 6-मालिक, 7-हादी, 8-वा'ली

कुरान मजीद में लफ़्ज़े वली व औलिया मज़कूरा बाला माअ़ना में इस्तेअ़माल हुआ है और इसका माअ़ना और मफ़हूम हर आयत में मुतफ़र्रिक है और आयत के मफ़हूम के एतबार से इसका माअ़ना मुराद लिया जाता है और ग़लत माअ़ना लेने से इन्सान के मुशरिक व काफ़िर होने का इमकान है चुनाँचा

कुरान मजीद में इरशादे बारी तअ़ाला है-

कि तुम्हारा (हक़ीक़ी मददगार और) दोस्त तो अल्लाह और उसका रसूल ही हैं और वो ईमान वाले हैं जो नमाज़ क़ायम रखते हैं और ज़कात देते हैं और वो (अल्लाह के हुज़ूर अ़ाजिज़ी से) झुकने वाले हैं। (सू०-मायदा- 55)

मज़कुरा आयते करीमा में वल्युन का माना दोस्त और मददगार लिया गया है अगर कोई शख़्स इस आयाते करीमा में वलयुन का माना माअ़बूद करे तो वो शख़्स मुश्रिक व काफ़िर हो जायेगा क्योंकि फिर इसका तर्जुमा ये होगा कि तुम्हारा माअ़बूद अल्लाह और रसूल ही हैं और मोमिन हैं इसलिये हर शख़्स को चाहिये कि अपने क़ल्ब को अल्लाह व रसूल और अल्लाह के महबूब व मक़बूल बन्दों की सच्ची व ख़ालिस मुहब्बत से मुज़य्यन करे और अल्लाह तअ़ाला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) और अल्लाह तअ़ाला के औलिया व सूफ़िया के लिये अपने अ़क़ीदे में हुस्ने ज़न रखे फिर इ़ल्मे नाफ़ेअ़ हासिल करे ताकि वो बद अ़क़ीदगी और गुमराही से महफ़ूज़ रहे वरना उसका इ़ल्म उसके लिये मुसीबत और ख़सारे बाइस बनेगा।

सू०–अहज़ाब की आयत न०–6 में इसका माअ़ना क़रीब व मालिक मुराद लिया गया है और सू०–अनफ़ाल की आयत न०–72 में औलिया का माअ़ना वारिस लिया गया है और सू०–बक़राह की आयत न०–257 में वली का माअ़ना हामी और वा'ली मुराद लिया गया है और सू०–अनक़बूत की आयत न०–41 और सू०–जुमर की आयत न०–3 में औलिया व माअ़ना माअ़बूद है इसी तरह कुरान मजीद में अलग अलग मक़ामात पर वली व औलिया का माअ़ना आयत के मफ़हूम के मुताबिक़ जुदा जुदा है।

अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने पैग़ामे तौहीद अपने बन्दों तक पहुँचाने के लिये अम्बिया–किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) को दुनियाँ में भेजा और जब सिलसिला–ए–नबूवत सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) पर ख़त्म हो गया तब अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने औलिया–किराम को दुनियाँ में भेजने का सिलसिला शुरू किया और क़यामत तक औलिया अल्लाह दुनियाँ में तशरीफ़ लाते रहेंगें और ये सिलसिला हज़रत मेंहदी (अ़लैहिस्सलाम) पर ख़त्म होगा औलिया–किराम बारगाहे मुस्तफ़ा की ख़ैरात लोगों में तक़सीम करते हैं और राहे ख़ुदा की तरफ़ लोगों को राग़िब करते हैं और बारगाहे ईलाही में कुर्बत व रसाई का सीधा रास्ता दिखाते हैं और इन औलिया अल्लाह की मुक़द्दस बारगाह से लोग मुस्तफ़ीज़ और मुस्तफ़ीद होते हैं।

और जिस शख़्स को अल्लाह तबारक व तअ़ाला की कुर्बत व माअ़रिफ़त की दरकार हो उसके लिये ज़रूरी है कि वो औलिया की मुहब्बत व कुर्बत और संगत इख़्तियार करे और इनके वसीले और ज़रिये से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह तक कुर्ब व रसाई हासिल करे और इसके लिये सबसे पहले ये ज़रूरी है कि अल्लाह तअ़ाला के औलिया से वाबस्ता हो और उनसे मुहब्बत का ताअ़ाल्लुक़ जोड़ ले क्योंकि अल्लाह के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दों के ज़रिये ही अल्लाह का कुर्ब और बारगाहे ईलाही तक रसाई मुम्किन है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–

सुन लो बेशक़ औलिया अल्लाह पर न कोई ख़ौफ़ है और न वो रंजीदा व ग़मगीन होंगे। (सू०–यूनुस–62)

औलिया अल्लाह की शानो अ़ज़मत और उनकी अ़लामत ये हैं कि वो फ़राइज़ व वाजिबात और सुनन व नवाफ़िल की अदायगी के साथ साथ मुस्तहब को भी तर्क नहीं करते और तमाम अवामिर व नवाही पर मुकम्मल अ़मल पैरा रहते हैं उन्हें अल्लाह तबारक व तआ़ला का कुर्बे ख़ास हासिल होता है और उनके क़ल्ब पर बारगाहे इलाही से अनवार का नुजूल होता है और उनके दिल इश्के इलाही से मुज़य्यन होते है और वो हमा वक़्त अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में मशगूल रहते हैं और उनके तमाम अक़वाल व अफआ़ल में अल्लाह तआ़ला की इताअ़त हमा वक़्त शामिल रहती है और वो मआ़रिफ़ते इलाही के बुलन्द मन्सब पर फ़ाइज़ होते हैं और जब वो देखते हैं तो तसव्वुर में अल्लाह के नूर का मुशाहदा करते हैं।

और जब वो सुनते है तो अललाह तआ़ला की आयतें सुनते हैं और जब वो बोलते हैं तो अल्लाह तआ़ला की हम्दो सना के साथ बोलते हैं और जब वो हरकत करते हैं तो इताअ़ते इलाही में हरकत करते हैं और जब वो कोशिश करते हैं तो उस चीज़ के लिये कोशिश करते हैं जो कुर्बे इलाही का ज़रिया हो और वो अल्लाह तबारक व तआ़ला के ज़िक्र से कभी नहीं थकते ये औसाफ़ औलिया के हैं और जब बन्दे में ये औसाफ़ आ जायें तो वो अल्लाह का वली होता है और अल्लाह के वलियों पर रोज़े क़यामत न कोई ख़ौफ़ होगा न वो ग़मगीन होंगे बलिक वो नूर के मिम्बरों पर जलवा अफ़रोज़ होंगे और न ही मौत के वक़्त उन पर कोई ख़ौफ़ होगा बल्कि वो तो अपने रब से मुलाक़ात के मुश्ताक़ होते हैं।

इरशादे बारी तआ़ाला है-

सारे दोस्त व अहवाब उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे सिवाये परहेज़गारों के (उन्हीं की दोस्ती और विलायत काम आयेगी) उनसे फ़रमाया जायेगा ऐ मेरे (मुक़र्रब) बन्दों आज के दिन तुम पर न कोई ख़ौफ़ है और न ही तुम ग़मज़दा होगे। (सू०-जुख़रुफ़ -43/67,68)

मज़कूरा आयते करीमा से मालूम हुआ कि रोज़े क़यामत कोई जान किसी दूसरी जान के काम न आयेगी सिवाय अल्लाह के मुक़र्रब और मख़सूस बन्दों के इसलिये अहले ईमान के लिये ज़रूरी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) और औलिया-किराम से सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत रखें क्योंकि इनकी मुहब्बत रोज़े क़यामत हमें ज़रूर नफ़ा देगी और इन्हीं की दोस्ती उस वक़्त हमारे काम आयेगी।

अल्लाह तबारक व तआ़ाला अपने औलिया पर रहमत के साथ ख़ास तौफ़ीक़े इनायत को हमेशा शामिले हाल रखता है यहाँ तक की अगर कोई वली किसी बुराई या ग़ैर शरई फ़ेअ़ल का इरादा भी करे तो अल्लाह तबारक व तआ़ाला उसकी उस इरतिकाब से हिफ़ाज़त फ़रमाता है और रोज़े क़यामत भी अल्लाह तबारक व तआ़ाला अपने मुर्क़रब व मख़सूस बन्दों पर ख़ास फ़ज़्लो करम फ़रमायेगा और उन्हें क़यामत की तमाम हौलनाकियों और मसाइबो आलाम से महफ़ूज़ रखेगा और वो हर ख़ौफ़ व ग़म से महफ़ूज़ रहेगें और अल्लाह की रहमत के साये में होंगे और अल्लाह तबारक व तआ़ाला उन्हें जन्नत के आअ़ला मक़ाम व दरजात और मरातिब से सरफ़राज़ फ़रमायेगा और उनको इस शरफ़े अ़ज़ीम से भी बहरेयाब फ़रमायेगा कि वो अपने चाहने वालों और सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत रखने वालों की शफ़ाअ़त करेगें।

कुरान मजीद में अल्लाह तबारक व तआ़ाला फ़रमाता है–

आप उन लोगों को जो अल्लाह पर और योमे आख़िरत पर ईमान रखते हैं कभी उस शख़्स से दोस्ती करते हुये न पायेंगे जो अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) से दुश्मनी रखता है ख़्वाह वो उनके बाप (और दादा) हों या बेटे (और पोते) हों या उनके भाई हों या उनके क़रीबी रिश्तेदार हों यही वो लोग है जिनके दिलों में उस (अल्लाह) ने ईमान सब्त फरमां दिया है और उन्हें अपनी रुह (यानी फ़ैज़े ख़ास) से तक़वियत बख़्शी है और उन्हें (ऐसी) जन्नतों में दाख़िल फ़रमायेगा जिनके नीचे से नहरें बह रही हैं वो उनमें हमेशा रहने वाले हैं अल्लाह उनसे राज़ी हो गया है और वो अल्लाह से राज़ी हो गये हैं यही अल्लाह (वालों) की जमाअ़त है याद रखो बेशक़ अल्लाह (वालों) की जमाअ़त ही मुराद पाने वाली है।
(सू०–मुजादिला–58/22)

इस आयते करीमा में उन लोगों का हाल बयान किया जा रहा है जो लोग अल्लाह तआ़ाला और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं ये वो लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह तआ़ाला ने ईमान नक्श फरमां दिया है और उनकी इमदाद फ़रमाई अल्लाह तआ़ाला उन अहले ईमान वालों को जन्नत के बाग़ों में दाख़िल फ़रमायेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं ये लोग उनमें हमेशा–हमेशा रहेंगे अल्लाह तआ़ाला उनके ख़ालिस ईमान व ताअ़त के सबब उनसे राज़ी हो गया और वो अल्लाह की रहमत और उसके करम से राज़ी हो गये और ये अल्लाह तआ़ाला के मुक़र्रब और ख़ास बन्दों की जमाअ़त है और ये अल्लाह वालों की जमाअ़त ही क़ामयाब है कि ये जहन्नुम की आग से महफ़ूज़ रहेंगे और जन्नत की अ़ज़ीमुश्शान दायमी नेअ़मतों में हमेशा रहेंगे और ये वो लोग हैं जो अल्लाह तआ़ाला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) से दुश्मनी व अ़दावत रखने वालों से दुश्मनी व अ़दावत रखते हैं और इससे मुराद कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन

और गुस्ताख़े रसूल हैं ख़्वाह वो उनके बाप (और दादा) हों या बेटे (और पोते) हों या उनके भाई हों या उनके क़रीबी रिश्तेदार हों।

अल्लाह तबारक व तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–

और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की इताअ़त करे तो यही लोग रोज़े क़यामत उन हस्तियों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह तआ़ला ने ख़ास इनआ़म फ़रमाया है जो कि अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिहीन हैं और ये बहुत अच्छे साथी हैं।
(सू०–निसा–69)

मज़कूरा आयते करीमा में शुहदा से मुराद वो हज़रात हैं जिन्होंने राहे खुदा में जानें दीं और सिद्दीक़ीन से मुराद वो लोग हैं जो अपने क़ौलो फ़ेअ़ल में सच्चे हैं जैसे हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बग़ैराह और सालिहीन से मुराद तमाम औलिया–किराम व सूफ़िया–इज़ाम और अक़ाबिरीने सहाबा–किराम और वो जमाअ़त जिन्होंने हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुलइबाद दोनों अदा किये और जिनके अहवाल व आअ़माल और ज़ाहिरो बातिन दोंनों अच्छे व पाक हैं तो सबसे पहले हम सालिहीन के बारे में तफ़सीलन बयान करेंगे फिर उसके बाद सिद्दीक़ीन की वज़ाहत करेंगे।

इस आयते करीमा में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अम्बिया, सिद्दीक़ीन, व शुहदा के साथ साथ सालिहीन पर भी अपना ख़ास फ़ज़्ल व इनआ़म का ज़िक्र फ़रमाया और ख़ास फ़ज़्ल व इनआ़म सिर्फ़ उस शख़्सियत पर किया जाता है कि जिससे अल्लाह राज़ी हो जाये और जिसे अल्लाह का मक़बूल व मख़सूस बन्दा होने का शरफ़ हासिल हो जाये और अल्लाह उससे मुहब्बत करता हो और वो अल्लाह से मुहब्बत करता हो और अल्लाह तआ़ला नेक सालिहीन बन्दों को मन्सबे विलायत के लिये मुन्तख़ब फ़रमाता है।

और उन्हें शरफ़े विलायत से सरफ़राज़ फ़रमाता है और उनको इल्मो हिकमत के ख़ज़ाने अ़ता फ़रमाता है और आख़िरत में उन्हें वो नेअ़मतें व राहतें और दरजात व मरातिब अ़ता फ़रमायेगा जिसका तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता औलिया अल्लाह की शानो अ़ज़मत बुलन्द व बाला है इनका ज़िक्र अल्लाह तआ़ला ने कुरान मजीद में कई मक़ामात पर किया है और अहादीसे मुबारक में भी इनकी शानो अ़ज़मत के बे शुमार तज़किरे वारिद हैं इनकी शान ये है कि ये जुहदो तक़्वा के हामिल होते हैं जिनका हर लम्हा ज़िक्रे इलाही और यादे इलाही से ख़ाली नहीं होता और ये न किसी को लानत भेजते हैं और न किसी को हक़ीर जानते हैं और हिर्स व लालच से हमेशा किनारा कश रहते हैं और छोटी से छोटी कमतर दर्जे वाली बुराई से भी इजतिनाब करते हैं और ये न किसी को अज़्ज़ियत देते हैं और न तकब्बुर करते हैं और खुद पर फ़ौक़ियत रखने वालों से भी ये हसद नहीं करते और दुनियाँ व मताऐ दुनियाँ की हर शैः से बेज़ार और बे रग़बत रहते हैं इनके किसी भी अ़मल में रिया शामिल नहीं होती और इनके दिल इश्क़े इलाही और इश्क़े रसूल से लबरेज़ रहते हैं और नफ़्स के एतबार से ये ज़्यादा परेज़गार होते हैं और सख़ावत इनकी फ़ितरत में होती है और इनकी ख़सलत हुस्ने ख़ुल्क़ और ये कामिले ईमान व कामिले तवक्कुल और नफ़्स कश और सरापा हुस्ने अ़दब होते हैं और इनके दिल अल्लाह तआ़ला की रज़ा और शौक़ में आसमान की तरफ़ बुलन्द रहते हैं।

–: सिद्क़ के माअ़नी और उसके मरातिब :–

हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह) फ़रमाते हैं सिद्क़ 6 (छः) माअ़नी में इस्तेअ़माल होता है।
1:–पहला सिद्क़ ''ज़बान का सिद्क़'' है और ये सिर्फ़ ख़बर देने में या उन बातों में होता है जो ख़बरों में शामिल हों

और उन से आगाही हो और उसमें वायदे को पूरा करना और उसकी ख़िलाफ वरज़ी न करना भी दाख़िल है लिहाज़ा हर बन्दे को चाहिये कि वो अपने अल्फ़ाज़ व ज़बान की हिफ़ाज़त करे और हमेशा सच्ची बात ही कहे।

2:– दूसरा सिद्क़ ''इरादे और नियत के मुतअ़ल्लिक़'' है और ये इख़लास के तरफ़ लौटता है यानी बन्दे की हरकात व सकनात का बाइस सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की ज़ाते पाक होती है अगर उसमें कोई नफ़्सानी ग़रज़ भी आ जाये तो सिद्क़े नियत बातिल हो जाती है और ऐसे शख़्स को झूठा कहना दुरस्त है लिहाज़ा हर सादिक़ का मुख़लिस होना ज़रूरी है।

3:– तीसरा सिद्क़ ''अ़ज़्म का सिद्क़ है'' क्योंकि बाज़ औक़ात इन्सान किसी अ़मल का पुख़्ता इरादा करता है और दिल में कहता है कि अगर अल्लाह तआ़ला ने मुझे माल अ़ता फ़रमाया तो मैं तमाम माल सद्क़ा करूँगा या ये कि अगर अल्लाह तआ़ला के रास्ते में मेरा दुश्मन से मुक़ाबला हो तो मैं उससे लड़ूँगा और उस लड़ाई में अगर मैं क़त्ल हो जाऊँ तो मुझे इसकी परवाह न होगी या अगर अल्लाह तआ़ला मुझे हुकूमत दे तो मैं इन्साफ़ करूँगा और ज़ुल्म न करूँगा और अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी न करूँगा ये अ़ज़्म व इरादा दिल में होता है और इन्तिहाई पुख़्ता और सच्चा होता है बाज़ औक़ात इसमें मख़लूक़ या दूसरी तरफ़ मैलान (तवज्जो) और तरद्दुद (फ़िक्र, अन्देशा, पसोपेश) होता है नीज़ ऐसी कमज़ोरी होती है जो अ़ज़्म में सिद्क़ के मुक़ाबिल और उसके बरअक्स होती है तो सादिक़ और सिद्दीक़ वो शख़्स है जिसका पुख़्ता इरादा तमाम नेकियों में कुव्वते तामा के साथ होता है और उसमें किसी क़िस्म का मैलान व तरद्दुद और कमज़ोरी नहीं होती और उसका नफ़्स हमेशा नेक कामों की तरफ़ पुख़्ता इरादा रखता है।

4:– चौथा सिद्क़ ''अ़ज़्म को पूरा करने का सिद्क़'' है क्योंकि बाज़ औक़ात नफ़्स अ़ज़्म कर लेता है और उसकी वजह ये होती है कि वायदे और अ़ज़्म में कोई मशक़्क़त नहीं होती और उसमें मेहनत भी नहीं होती है लेकिन जब हक़ीक़त का सामना होता है और शहवत का ज़ोर होता है तो अ़ज़्म ख़त्म हो जाता है और ख़्वाहिशातें ग़ालिब आ जाती हैं जिसकी वजह से वो अ़ज़्म को पूरा नहीं कर सकता ये बात सिद्क़ के ख़िलाफ़ है।

5:– पांचवाँ सिद्क़ ''आअ़माल का सिद्क़'' है यानी इन्सान कोशिश करे हत्ता कि उसके ज़ाहिरी आअ़माल ऐसी बात पर दलालत करें कि उसके दिल में जो कुछ है वो ज़ाहिर के ख़िलाफ़ नहीं हैं और ये कोशिश आअ़माल को छोड़ने से न हो बल्कि बातिन को ज़ाहिर की तस्दीक़ की तरफ़ खींचने से हो और ये बात तर्के रिया से हासिल होती है क्योंकि रियाकार तो यही चाहता है कि उसके ज़ाहिर से बातिन की अच्छी सिफ़ात समझी जायें अलबत्ता कई नमाज़ी नमाज़ में खुशूअ़ व खुजूअ़ की सूरत में खड़े होते हैं और उनका मक़सद दूसरों को दिखाना नहीं होता लेकिन उनका दिल नमाज़ से ग़ाफ़िल होता है और जो शख़्स उसे देखता है वो उसे अल्लाह तआ़ला के सामने खड़ा देखता है जबकि बातिनी तौर पर वो ख़्वाहिशात में से किसी ख़्वाहिश के सामने बाज़ार में खड़ा होता है तो इस तरह ये आअ़माल ज़बाने हाल से बातिन की खबर देते हैं और वो इसमें झूठा होता है और उससे आअ़माल में सिद्क़ की बाज़ पुर्स होगी इसी तरह कोई शख़्स सुकून व वक़ार से चल रहा होता है हालाँकि उसका बातिन सुकून व वक़ार से मौसूफ़ नहीं होता तो ये भी अपने अ़मल में सच्चा नहीं होता अगरचा उसकी तवज्जै मख़लूक़ की तरफ़ न हो और न ही वो उनको दिखा रहा हो खुलासा ये है कि अगर ज़ाहिर का बातिन के ख़िलाफ़ होना क़स्द व इरादे से हो तो वो रिया है और इससे इख़लास ख़त्म हो जाता है और क़स्द व इरादे के बग़ैर हो तो इससे सिद्क़ फ़ौत हो जाता है–

और इस क़िस्म की ख़राबी से निजात की सूरत यही है कि ज़ाहिर व बातिन एक जैसा हो बल्कि बातिन ज़ाहिर से बेहतर हो।

6:- छटा और सबसे आअ़ला दर्जे का सिद्क़ ''मक़ामाते दीन में सिद्क़'' है जैसे ख़ौफ़, उम्मीद, ताअ़ज़ीम, जुहुद, रज़ा, तवक्कुल, मुहब्बत, अ़दब और बाक़ी दीने उमूर में सिद्क़ पाया जाना है इन उमूर की कुछ बुनियादें हैं जिनके ज़ाहिर होने से ये नाम बोले जाते हैं फिर उनके कुछ मक़ासिद और हक़ाइक़ हैं तो हक़ीक़ी सादिक़ वो है जो इन उमूर की हक़ीक़त को पा ले और जब कोई चीज़ ग़ालिब आ जाये और उसकी हक़ीक़त कामिल हो तो उससे मौसूफ़ शख़्स को सादिक़ कहा जाता है।

इरशादे बारी तअ़ाला है-

(ऐ मेरे बन्दे) तू अपने आप को उन लोगों की संगत में जमाए रखा कर कि जो सुबह व शाम अपने रब को याद करते हैं (और) उसकी रज़ा के तलबगार रहते हैं तेरी (मुहब्बत और तवज्जै की) निगाहें उनसे न हटें क्या तू (उन फ़क़ीरों और औलिया से ध्यान हटाकर) दुनियाँवी ज़िन्दगी की आराइश चाहता है। (सू०- कह्फ़-28)

इस आयते करीमा में उ़म्मते मुस्लिमा के आम अफ़राद को ये हुक्म दिया जा रहा है कि वो उन लोगों का साथ और सुहबत इख़्तियार करें जो सुबहो शाम अल्लाह तबारक व तअ़ाला के ज़िक्र में मशगूल रहते हैं और जिनकी हर घड़ी यादे इलाही में बशर होती है और वो हर वक़्त अल्लाह की रज़ा के तलबगार रहते हैं जो अल्लाह की कुर्बत का तलबगार हो उसे चाहिये कि अल्लाह वालों की सुहबत इख़्तियार करे और औलिया अल्लाह की शान ये है कि जिन्हें न जन्नत का लालच है और न ही दुनियाँ की तलब ये तो सिर्फ़ रब की रज़ा के तलबगार रहते हैं

और उसी के इश्क़ में मुस्तग़रक़ रहते हैं इस आयते करीमा से उन लोगों को इ़बरत लेना चाहिये जो औलिया अल्लाह की शान और उनकी अ़ज़मत के मुन्किर हैं।

इरशादे बारी तआ़ला है-

भला वो शख़्स जो मुर्दा (यानी ईमान से महरुम) था फिर हमने उसे (हिदायत की बदौलत) ज़िन्दा किया और हमने उसके लिये (ईमान व माअ़रिफ़त का) नूर पैदा फ़रमाया (अब) वो उसके ज़रिये (बक़िया) लागों में (भी रोशनी फैलाने के लिये) चलता है। (सू०-अनआ़म-122)

इससे मुराद अल्लाह के ख़ास बन्दे हैं कि जिनके दिल मुर्दा थे अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उन मुर्दा दिलों को ज़िन्दा करके नूरे विलायत से बहरेयाब फ़रमाया फिर उन्होंने उस नूर को लोगों में तक़सीम किया और ये उसी नूर का करिश्मा है कि औलिया-किराम आज भी उस नूर को लोगों में बांटते हैं और वो दिल जो मुर्दा थे वो सब उस नूर ने ज़िन्दा कर दिये अब मौत की क्या मजाल कि उन्हें मार सके मौत तो सिर्फ़ एक ज़ायक़ा है लेकिन रुह को कभी मौत नहीं आती और औलिया-किराम की अरवाह से आज भी लोग फ़ैज़े अनवार से मुस्तफ़ीज़ व मुस्तफ़ीद होते हैं।

रुहानियत की हक़ीक़त को न समझ पाने लोग ये सवाल करते हैं कि अल्लाह तआ़ला का एक वली हज़ारों मील की दूरी से अपने मुरीद को कैसे फैज़याब कर सकता है कम इ़ल्मी के बाइस पैदा होने वाले शुकूक शुब्हात का जवाब ये है कि इजराइल (अ़लैहिस्सलाम) यानी मल्कुल मौत एक फ़रिश्ता है जो इन्सानों की रुह क़ब्ज करने पर मामूर है लेकिन एक ही वक़्त में पूरी दुनियाँ में हज़ारों मौतें होती हैं तो वो एक फ़रिश्ता एक ही वक़्त में हज़ारों मील के दायरे में हज़ारों रुहें कैसे क़ब्ज़ कर सकता है तो जब हम इस बात पर ग़ौर करें तो हक़ीक़त वाज़ेह और नुमाया हो जायेगी

कि अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने उस फ़रिश्ते को ये ताक़त व कुदरत अ़ता फ़रमाई है कि वो एक ही वक़्त में हज़ारों मील के दायरे में हज़ारों रुहों को एक साथ क़ब्ज कर सके और इस हक़ीक़त का इदराक वही कर सकता है जिसका दिल वसीरते क़ल्बी और नूरे बातनी से बहरावर हो।

असहाबे कहफ़ का वाक़्या कुरान मज़ीद में यूँ मज़कूर है-

कि असहाबे कह्फ़ 309 साल तक एक ग़ार में लेटे रहे और जब वो उठे तो उन्हें यूँ गुमान हुआ कि गोया महज़ एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा सोते रहे और इन 309 क़मरी सालों में भूक प्यास से बेनियाज़ रहे और उन पर मौसम का कोई असर न हुआ और 309 साल के बाद जब वो उठे तो उनके जिस्म सालिम व तरो ताज़ा थे और रहमते खुदावन्दी से सूरज उन असहाबे कह्फ़ की वजह से 309 साल तक अपना रास्ता बदलता रहा और वो 309 साल तक महफूज़ रहे।

उनमें से एक कहने वाले ने कहा तुम (यहाँ) कितना अरसा ठहरे हो उन्होंने कहा (यहाँ) एक दिन या उसका कुछ हिस्सा ठहरे हैं। (सू०-कह्फ़-19)

कुरान मजीद की इस बात का इन्कार कैसे किया जा सकता है कि उन पर सदियाँ गुज़र गईं थीं मगर उन्के कपड़े बोसीदा न हुये थे और उनके जिस्मों पर कोई कमज़ोरी बग़ैराह के आसार न थे बल्कि वो ताज़िगी महसूस कर रहे थे जैसे कि वो चन्द घंटे की नींद से सो कर उठे हों ये अल्लाह के वलियों की शान है कि ग़ारों में सैंकड़ों साल रहने के बावजूद उनकी जिस्मानी हालत में कोई तब्दीली वाक़ेअ़ न हुयी थी औलिया-किराम की ये शान है कि विसाल के बाद भी मुशाहदा-ए-हक़ की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और असहाबे कह्फ़ के साथ उनका एक ख़िदमत गुज़ार कुत्ता भी था जो ग़ार की चौख़ट पर पाँव फैलाये उनकी-

हिफ़ाज़त पर मामूर रहा और वो भी तीन सौ नौ साल तक ग़ार की चौखट पर सोता रहा उसकी निसबत से कुरान मजीद में उस कुत्ते का भी ज़िक्र आया है।

इरशादे बारी तआ़ला है–

और हम (वक़्फ़ों के साथ) उन्हें दायीं जानिब और बायीं जानिब करवटें बदलाते रहते हैं और उनका कुत्ता (उनकी) चौखट पर अपने दोंनों बाजू फैलाये (बैठा) है।
(सू०–कह्फ़–18)

कुत्ते को ये मक़ाम उस ग़ार में मौजूद औलिया–किराम की निसबत से मिला मुफ़स्सिरीने–किराम फ़रमाते हैं जब वक़्फ़े वक़्फ़े पर असहाबे कह्फ़ दायें बायें करवट लेते तो वो कुत्ता भी करवट लेता था और तीन सदियों तक औलिया–किराम की फ़ैज़े रहमत से बहरेयाब होता रहा।

इरशादे बारी तआ़ला है–

और आप देखते हैं जब सूरज तुलूअ़ होता है तो उनके ग़ार से दाँयी जानिब हट जाता है और जब गुरुब होने लगता है तो उनसे बाँयी जानिब कतरा जाता है और वो उस ग़ार के कुशादा मैदान में (लेटे) हैं ये (सूरज का अपने रास्ते को बदल लेना) अल्लाह की (कुदरत की बड़ी) निशानियों में से है जिसे अल्लाह तआ़ला हिदायत फरमां दे सो वही हिदायत याफ़्ता हैं और जिसे वो गुमराह ठहरा दे तो आप उसके लिये कोई वली मुर्शिद (यानी राह दिखाने वाला मददगार) नहीं पायेंगे। (सू०–कह्फ़–17)

असहाबे कह्फ़ ज़ालिम बादशाह के शर से बचने और ईमान की हिफ़ाज़त व सलामती के लिये 309 साल ग़ार में छुप गये और सो गये अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मौत दे दी और 309 साल तक मुर्दा रखा लेकिन अपने मुक़र्रबीन बन्दों पर उसका खुखूसी करम कि सूरज को हुक्म दे दिया कि

वो अपना रास्ता बदल ले कि मेरे वली उस ग़ार में लेटे हैं और उनके साथ एक कुत्ता भी था जो ग़ार के बाहर सो गया और वो भी मुर्दा हो गया और हर 6 महीने में उन्हें करवट दी जाती थी जब असहाबे कह्फ़् को करवट दी जाती थी तो उस कुत्ते को भी करवट दी जाती थी यही एक कुत्ता है जो निसबते औलिया के बाइस जन्नत में दाख़िल होगा तो जब निसबते औलिया के सबब कुत्ते को अल्लाह तआ़ला जन्नत अ़ता करता है तो हम तो इन्सान के साथ-साथ मुसलमान और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के उम्मती हैं तो औलिया से मुहब्बत व निसबत के बाइस अल्लाह तआ़ला हमें जन्नत अ़ता ज़रुर करेगा हमारा ऐसा अ़क़ीदा रखना मज़बूत ईमान की दलील है।

-: औलिया से करामातों का ज़हूर होता है :-

इरशादे बारी तआ़ला है-

और (ऐ सुनने वाले) तू उन्हें (देखे तो) बेदार ख़्याल करेगा हालाँकि वो सोए हुए हैं (सू०-कह्फ़-18)

बाज़ औक़ात औलिया अल्लाह से करामातों का ज़हूर भी होता है जो कि कुरान से साबित है जैसा कि मज़कूरा आयते करीमा औलिया अल्लाह की करामातों की तरफ़ इशारा कर रही है कि इस आयते करीमा में तीन करामतें बयान हुई हैं एक तो जागने की तरह सोना दूसरी ये कि रब तआ़ला की तरफ़ से करवटें बदलना और तीसरी ये कि ज़मीन का उनके जिस्मों को न खाना और बग़ैर ग़िज़ा के तीन सौ नौ साल तक ज़िन्दा रहना और उनके कुत्ते का भी तीन सौ नौ साल तक लेटे रहना ये भी औलिया अल्लाह की करामत है।

हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) का वाक़्या कुरान मजीद में कुछ इस तरह बयान हुआ है-

हज़रत सुलेमान अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया-
ऐ दरबार वालो तुम में से कौन उसके तख़्त को मेरे पास ला सकता है क़ब्ल इसके कि वो लोग फरमां बरदार होकर मेरे पास आ जायें। (सू०-नम्ल-38)

जब बिलक़ीस इतना क़रीब पहुँच गयीं कि हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) से सिर्फ़ तीन मील का फ़ासला रह गया तो हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ दरबारियो तुम में से कौन है जो उन लोगों के मेरे पास फ़रमाबरदार होकर आने से पहले बिलक़ीस का तख़्त मेरे पास ले आये तख़्त मंगवाने से आप

(अ़लैहि सलातु वस्सलाम) का मक़सद ये था कि उसका तख़्त हाज़िर करके उसे अल्लाह तबारक व तअ़ाला और अपनी नबूवत पर दलालत करने वाला मोअ़जिज़ाह दिखा दें बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि हज़रत सुलेमान (अ़लैहि सलातु वस्सलाम) ने चाहा कि बिलक़ीस के आने से पहले उस तख़्त की वज़अ़ बदल दें और उससे उसकी अ़क़्ल का इम्तिहान लें कि वो अपना तख़्त पहचान सकती है या नहीं तो हज़रत सुलेमान (अ़लैहि सलातु वस्सलाम) की बात सुनकर एक जिन्न बोला मैं तख़्त आप (अ़लैहि सलातु वस्सलाम) की ख़िदमत में आप के उस मुक़ाम से खड़े होने से पहले हाज़िर कर दूँगा जहाँ आप (अ़लैहि सलातु वस्सलाम) फ़ैसले करने के लिये तशरीफ़ फ़रमां हैं और मैं बेशक उस तख़्त को उठाने पर कुव्वत रखने वाला और उसमें लगे हुए जवाहरात वग़ैराह पर अमानतदार हूँ।

जिसको कुरान मजीद ने इस अंदाज़ में बयान फ़रमाया–

एक क़वी हैकल जिन्न ने अ़र्ज़ किया मैं उसे आपके पास ला सकता हूँ क़ब्ल इसके कि आप अपने मक़ाम से उठें और बेशक़ मैं (उसके लाने) पर ताक़तवर (व) अमानतदार हूँ। (सू०–नम्ल–39)

लेकिन हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) चाहते थे कि तख़्ते बिलक़ीस इससे भी पहले दरबार में हाज़िर हो इस मौक़े पर आपका एक सहाबी जिसके पास किताबुल्लाह का इ़ल्म था उसने हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) से कहा

जिसको कुरान मजीद ने इस अंदाज़ में बयान फ़रमाया–

फिर एक ऐसे शख़्स ने अ़र्ज़ किया जिसके पास (आसमानी) किताब का कुछ इ़ल्म था कि मैं उसे आपके पास ला सकता हूँ क़ब्ल इसके कि आपकी निगाह आपकी तरफ़ पलटे (यानी पलक झपकने से पहले) फिर जब सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) ने उस (तख़्त) को अपने पास रखा हुआ देखा (तो) कहा–

कि ये मेरे रब का फ़ज़्ल है ताकि वो मुझे आज़माए कि मैं शुक्रगुज़ारी करता हूँ या नाशुक्री। (सू०-नम्ल-40)

तो जब हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) का एक बरगुज़ीदा सहाबी आँख झपकने से पहले तख़्ते बिलक़ीस अपने नबी के क़दमों में हाज़िर कर देता है तो जब ऐसी करामात का सुदूर हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) के एक उ़म्मती का हो सकता है तो फिर इस बात का बखूबी अंदाज़ा लगायें कि सरवरे कायनात सरकारे दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) के औलिया-किराम व सूफ़िया-इज़ाम की करामातों का अ़ालम क्या होगा।

-: हज़रत मरयम का रिज़्क़ व करामात :-

जब भी ज़करिया उसके पास उसकी इबादत गाह में दाख़िल होते तो वो उसके पास (नई से नई) खाने की चीज़ें मौजूद पाते उन्होंने पूछा ऐ मरयम ये चीज़ें तुम्हारे लिये कहाँ से आती हैं उसने कहा ये (रिज़्क़) अल्लाह तअ़ाला के पास से आता है। (सू०-आले इमरान-37)

अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने नज़र में हज़रत मरयम (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) को कुबूल फ़रमा लिया और उन्हें अहसन अन्दाज़ में परवान चढ़ाया हज़रत मरयम (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) दूसरे बच्चों की बा निसबत बहुत तेज़ी के साथ बढ़ती रहीं और अल्लाह तअ़ाला ने हज़रत मरयम (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) को बहुत अ़ज़मत अ़ता फ़रमाई आप (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) के पास बे मौसम फल आते जो जन्नत से उतरते और जब ज़करिया (अ़लैहिस्सलाम) उनके पास जाते तो वहाँ बे मौसम फल पाते एक मर्तबा ज़करिया (अ़लैहिस्सलाम) ने हज़रत मरयम (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) से सवाल किया कि ये फल तुम्हारे पास कहाँ से आते हैं तो हज़रत मरयम-

(रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) बचपन की उ़मर में जवाब दिया कि ये अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ से आते हैं हज़रत मरयम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने ये कलाम उस वक़्त किया जब वो पालने यानी जब झूले में पर‘वरिश पा रहीं थीं जैसा कि उनके फ़रज़न्द हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) ने इसी हाल में कलाम फ़रमाया था इस आयते करीमा में कई करामातें ज़ाहिर हुई हैं पहली ये कि हज़रत मरयम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) का हालते बचपन में कलाम करना यानी जब झूले में पर‘वरिश पा रहीं थीं और इस उ़मर में बच्चे कलाम नहीं करते दूसरी ये कि उनके पास बे मौसम फलों का आना और तीसरी ये कि दूसरे बच्चों की बा निसबत बहुत तेज़ी के साथ बढ़ना इससे साबित हुआ कि औलिया अल्लाह से करामातों का ज़हूर होता है।

इरशादे बारी तआ़ाला है –

उन्हें आवाज़ दी गई कि रंजीदा न हो बेशक तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिये एक चश्मा जारी कर दिया है और खजूर के तने को पकड़कर अपनी तरफ़ हिलाओ वो तुम पर ताज़ा पकी हुई खजूरें गिरा देगा।
(सू०–मरयम–24–25)

जब हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) की विलादत का वक़्त आया और दर्द की शिद्दत ज़्यादा हुई तो हज़रत मरयम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) खजूर के एक सूखे दरख़्त के पास आकर बैठ गईं अब दर्द की भी शिद्दत थी और दूसरी तरफ़ मुस्तक़बिल के मुआ़ामलात भी थे और आप (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) शदीद परेशानी के आ़लम में थीं तो अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने हज़रत मरयम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) को शफ़क़त के साथ तसल्ली दी कि ऐ मरयम जो पाक ज़ात तेरे लिये खुश्क ज़मीन से पानी जारी कर सकती है और खुश्क दरख़्त से पकी हुई खजूरें ज़ाहिर कर सकती है वो आइन्दा भी तुम्हारी मदद व

नुसरत और शफ़क़त फ़रमायेगी और तुम्हें बे मददगार नहीं छोड़ेगी लिहाज़ा तुम अपने रब की इनायतों व शफ़क़तों पर नज़र करो और ग़म व परेशानी का इज़हार न करो।

फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया–

सो तुम खाओ और पिओ ओर (अपने हसीन व जमील बेटे को देखकर) अपनी आँखें ठन्डी करो फिर अगर तुम किसी इन्सान को देखो तो (इशारे से) कह देना कि मैने (खुदाये) रहमान के लिये (ख़ामोशी के) रोज़े की नज़र मानी हुई है सो मैं आज किसी इन्सान से क़तअ़न गुफ़्तगू नहीं करुँगी। (सू०–मरयम–26)

फिर जब हज़रत मरयम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) उस बच्चे यानी हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) को गोद में लेकर अपनी क़ौम के पास आ गयीं

जिसको कुरान मजीद ने कुछ इस अंदाज़ बयान किया है–

फिर वो उस (बच्चे) को (गोद में) उठाये हुये अपनी क़ौम के पास आ गयीं वो कहने लगे ऐ मरयम यक़ीनन तू बहुत ही अ़जीब चीज़ लायी है ऐ हारून की बहन न तेरा बाप बुरा आदमी था और न ही तेरी माँ बदचलन थी तो हज़रत मरयम ने उस बच्चे की तरफ़ इशारा किया तो वो कहने लगे हम इससे किस तरह बात करें जो (अभी) गहवारे में बच्चा है तो (बच्चा खुद) बोल पड़ा मैं अल्लाह का बन्दा हूँ उसने मुझे किताब अ़ता फ़रमाई है और मुझे नबी बनाया है और मैं जहाँ कहीं भी रहूँ उसने मुझे सरापा बरकत बनाया है और मैं जब तक भी ज़िन्दा हूँ उसने मुझे नमाज़ और ज़कात का हुक्म फ़रमाया है और अपनी वालिदा के साथ नेक सुलूक करने वाला बनाया है और उसने मुझे सरकश व बद बख़्त नहीं बनाया और मुझ पर सलाम हो मेरे मीलाद के दिन और मेरी वफ़ात के दिन और जिस दिन मैं ज़िन्दा उठाया जाऊँगा। (सू०–मरयम–27 ता 33)

और इस तरह अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपनी वलीया हज़रत मरयम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) की मदद फ़रमायी और हज़रत मरयम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से करामत भी सादिर हुई कि सूखे तने को मस करने से ताज़ा पकी हुई खजूरें गिरीं और इसी तरह अल्लाह तआ़ला अपने वलियों की हर मुश्किल वक़्त में मदद फ़रमाता है क्योंकि औलिया-अल्लाह हर वक़्त अल्लाह तबारक व तआ़ला की ख़ास कुर्बत में रहते हैं और विलायत के दर्जे और मरातिब में हर एक वली अपने दरजे के मुताबिक फ़ज़्ल व शरफ़ रखता है।

इरशादे बारी तआ़ला है-

पस वो दोनों चल दिये यहाँ तक कि जब दोनों कश्ती में सवार हुये (तो ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने) उस कश्ती में शिगाफ़ कर दिया तो मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा क्या आपने इसे इसलिये (शिगाफ़ करके) फाड़ डाला है कि आप कश्ती वालों को ग़र्क़ कर दें बेशक आपने बड़ी अ़जीब बात की। (सू०- कह्फ़-71)

हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) और ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) कश्ती की तलाश में साहिल के किनारे चलने लगे जब उनके पास से एक कश्ती गुज़री तो कश्ती वालों ने ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) को पहचान लिया और बग़ैर मुआवज़ा के सवार कर लिया जब कश्ती समुन्दर के बीच में पहुँची तो हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) ने कुलहाड़ी के ज़रिये कश्ती का एक तख़्ता उखाड़ दिया ये देखकर हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया क्या तुमने इस कश्ती को इसलिये चीर दिया ताकि कश्ती वालों को ग़र्क़ कर दो बेशक ये तुमने बहुत बुरा काम किया है इस में हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) की इ़ल्मो हिकमत की एक करामत पोशीदा थी और दूसरी करामत ये थी कि कश्ती में शिगाफ़ हाने के बाबजूद कश्ती न डूबी।

कश्ती में शिगाफ़ करने की वजह भी क़ुरान में मज़कूर है–

वो जो कश्ती थी सो वो चन्द ग़रीब लोगों की थी वो दरिया में मेहनत मज़दूरी किया करते थे पस मैंने इरादा किया कि उसे ऐबदार कर दूँ और (उसकी वजह ये थी कि) उनके आगे एक (जाबिर) बादशाह (खड़ा) था जो हर (बे ऐब) कश्ती को जबरदस्ती (मालिकों से बिला मुआ़वज़ा) छीन रहा था। (सू०–कह्फ़–79)

इरशादे बारी तआ़ला है–

फिर वो दोनों चल दिये यहाँ तक कि दोनों एक लड़के से मिले तो (ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने) उस (लड़के) को क़त्ल कर डाला तो मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा क्या आप ने बे गुनाह जान को बग़ैर किसी जान (के बदले) क़त्ल कर दिया है बेशक आप ने बड़ा ही सख़्त काम किया है।
(सू०–कह्फ़–74)

यानी कश्ती से उतर कर दोनों चले और एक ऐसे मक़ाम से गुज़रे जहाँ लड़के खेल रहे थे वहाँ उन्हें एक जवान लड़का मिला जो काफ़ी खूबसूरत था तो ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) ने उसे क़त्ल कर दिया ये देखकर हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) से फिर न रहा गया और आपने फ़रमाया कि तुमने किसी जान के बदले के बग़ैर एक जान जिसका कोई गुनाह साबित न था को क़त्ल कर दिया बेशक तुमने बहुत नापसंदीदा काम किया है इस आयत में हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) की ये करामत बयान हुई है कि उन्होंने मक़तूल बच्चे और उसके वालिदैन के अंजाम को जान लिया कि वो मोमिन रहेंगे और ये लड़का काफ़िर होगा

ये मज़मून क़ुरान ने कुछ इस तरह बयान फ़रमाया–

और वो जो लड़का था तो उसके माँ–बाप साहिबे इमान थे पस हमें अन्देशा हुआ कि ये (अगर ज़िन्दा रहा तो काफ़िर

बनेगा और) उन दोनों को (बड़ा होकर) सरकशी और कुफ़्र में मुब्तिला कर देगा पस हमनें इरादा किया कि उनका रब उन्हें (ऐसा) बदल अ़ता फ़रमाये जो पाकीज़गी में (भी) उस (लड़के) से बेहतर हो और शफ़क़त व रहम दिली में (भी वालिदैन से) क़रीब तर हो। (सू०-कह्फ़-80,81)

इरशादे बारी तआ़ला है-

फिर दोनों चल दिये यहाँ तक कि जब वो दोनों एक बस्ती वालों के पास आ पहुँचे तो दोनों ने वहाँ के बाशिन्दों से खाना तलब किया तो उन्होंने उन दोनों की मेज़बानी करने से इन्कार कर दिया फिर दोनों ने वहाँ एक दीवार पायी जो गिरने वाली थी तो (ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने) उसे सीधा कर दिया तो मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा अगर आप चाहते तो इस (ताअ़मीर) पर मज़दूरी ले लेते (सू०-कह्फ-77)

जब वो दोनों एक बस्ती वालों के पास पहुँचे तो इन हज़रात ने उन बस्ती के बाशिन्दों से खाना माँगा उन्होने इन दोनों की मेहमान नवाज़ी करने से इन्कार कर दिया फिर इन दोनों ने उस बस्ती में एक दीवार पाई जो गिरने वाली थी तो हज़रत ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) ने अपने दस्ते मुबारक से उसे सीधा कर दिया ये देखकर हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि अगर आप चाहते तो इस दीवार को सीधी करने पर कुछ मज़दूरी ले लेते क्योंकि ये हमारी हाजत का वक़्त है और बस्ती वालों ने हमारी मेहमान नवाज़ी भी नहीं की इसलिये ऐसी हालत में उनका काम बनाने पर उजरत लेना मुनासिब था इस आयत में ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) की ये करामत बयान हुई है कि उन्होने ज़मीन के नीचे का दफ़ीना मालूम कर लिया।

जिसको कुरान मजीद ने इस अंदाज़ में बयान फ़रमाया-

और वो जो दीवार थी वो शहर में (रहने वाले) दो यतीम बच्चों की थी और उसके नीचे उन दोनों के लिये एक-

ख़ज़ाना (मदफ़ून) था और उनका बाप सालेह (शख़्स) था सो आपके रब ने इरादा किया कि वो दोनों अपनी जवानी को पहुँच जायें और आपके रब की रहमत से वो अपना ख़ज़ाना (खुद ही) निकालें और मैंने (जो कुछ भी किया) वो अज़ खुद नहीं किया (सू०-कह्फ़-82)

-: करामाते सहाबा :-

हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) की करामत

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने एक लश्कर भेजा और उन पर एक शख़्स को अमीर मुक़र्रर फ़रमाया जिनको हज़रत सारिया कहा जाता है हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) खुत्बा-ए-जुमआ़ इरशाद फ़रमा रहे थे कि यकायक आपने दरमियान में खुत्बा छोड़कर तीन बार फ़रमाया ऐ सारिया पहाड़ की तरफ़ जाओ इस तरह हज़रत सारिया (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) को पहाड़ की तरफ़ जाने का हुक्म दिया उसके बाद फिर खुत्बा शुरू किया

हज़रत अ़ब्दुर्ररहमान बिन औ़फ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने बाद नमाज़ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से दरयाफ़्त किया कि आप तो खुत्बा इरशाद फ़रमा रहे थे फिर यकायक बुलन्द आवाज़ से कहने लगे ऐ सारिया पहाड़ की तरफ़ जाओ ये क्या मुआ़मला था तो हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने फ़रमाया कि क़सम है खुदा-ए-रहमान की मैं ऐसा कहने पर मजबूर हो गया था कि मैंने मुसलमानों को देखा कि वो पहाड़ के पास लड़ हैं और कुफ़्फ़ार उनको आगे से और पीछे से घेरे हुये हैं ये देखकर मुझसे ज़ब्त न हो सका और मैंने कह दिया कि ऐ सारिया पहाड़ की तरफ़ जाओ इस वाक़्ये के कुछ-

रोज़ बाद हज़रत सारिया (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) का क़ासिद एक ख़त लेकर आया कि हम लोग जुमाअ़ के दिन कुफ़्फ़ारों से लड़ रहे थे और क़रीब था कि हम शिकस्त खा जाते मगर ऐ़न जुमाअ़ की नमाज़ के वक़्त हमने किसी की आवाज़ सुनी कि ऐ सारिया पहाड़ की तरफ़ जाओ उस आवाज़ को सुनकर हम पहाड़ की तरफ़ चले गये तो अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों को शिकस्त दी और हमने उन्हें क़त्ल कर डाला और इस तरह हमको फ़तह हासिल हुई। (मिश्कात–3/203–5700) (अहमद–फ़जाइले सहाबा–1/219-355)

–: दीगर सहाबा की करामात :–

हदीस– हज़रत अ़नस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हज़रत उसैद बिन हुज़ैर व हज़रत अ़ब्बाद बिन बिशर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) अपनी किसी हाजत के मुताअ़ल्लिक़ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की बारगाह में गुफ़्तगु कर रहे थे कि कुछ रात गुज़र गयी और वो सख़्त अंधेरी रात का वक़्त था जब वो वापस जाने के लिये रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की बारगाह से निकले तो दोनों के हाथों में लाठियाँ थी पस एक की लाठी दोनों के लिये रोशन हो गयी और उसके उजाले में वो दोनों चलते रहे जब दोनों के रास्ते जुदा हुये तो दूसरी की लाठी भी रोशन हो गयी और दोनों हज़रात अपनी अपनी लाठी के उजाले में अपने घर वालों तक पहुँच गये। (बुख़ारी–3/695–ह०–3639) (मिश्कात–3/199–ह०–5690)

हदीस– हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फ़रमाया– कि जब ग़ज़वा उहद दरपेश आया तो मेरे वालिद मोहतरम ने मुझे रात के वक़्त बुलाकर फ़रमाया कि मेरे ख़्याल में नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के असहाब मे से जो हज़रात शहीद होंगे मैं उनमें सबसे

पहले ख़ुद को पाता हूँ मैं अपने बाद किसी को नहीं छोड़ रहा हूँ जो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की ज़ाते अ़क्दस के सिवा मुझे तुम से ज़्यादा अ़ज़ीज़ हो मेरे ऊपर क़र्ज़ है उसे अदा कर देना और अपनी बहनों के मुताअ़ल्लिक़ मेरी नेकी की वसीअ़त कुबूल करो सुबह हुई तो सबसे पहले वही शहीद हुये और एक दूसरे शहीद के साथ उन्हें क़ब्र में दफ़न किया गया।
(बुख़ारी सही–2/114-ह०–1351) (मिश्कात–3/199–ह०–5691)

हदीस– हज़रत इब्ने मुन्कदर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रोमियों की सरज़मीन में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के आज़ाद कर्दा गुलाम हज़रत सफ़ीना लश्कर से बिछड़ गये या क़ैद कर लिये गये पस वो भाग कर लश्कर को तलाश करते हुये आ रहे थे तो एक शेर आ गया फ़रमाया कि उन्होंने शेर से कहा कि ऐ अबुल हारिस मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) का आज़ाद कर्दा गुलाम हूँ और मेरे साथ ये वाक़्या पेश आया है यानी मैं रास्ता भूल गया हूँ या काफ़िरों ने मुझको गिरफ़्तार कर लिया था शेर दुम हिलाता हुआ आगे बढ़ा और उनके पहलू में खड़ा हो गया जब वो कोई ख़ौफ़नाक़ आवाज़ सुनता तो उसकी जानिब मुतवज्जै होता यानी उसके ज़रर को दिफ़ा करने के लिये और फिर वापस आ जाता और फिर सफ़ीना के पहलू में साथ साथ बराबर चलता रहा यहाँ तक कि सफ़ीना अपने लश्कर तक पहुँच गये फिर शेर वापस चला गया। (मिश्कात–3/201–ह०–5695)

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने मख़सूस व मुक़र्रब और बरगुज़ीदा बन्दों को इल्मो हिकमत व माअ़रिफ़त और इल्मे ग़ैब के ख़ज़ानों की कुंजिया अ़ता फ़रमाता है और विलायत कुर्बे इलाही और हमेशा अल्लाह तआ़ला के साथ रहने का नाम है और जब बन्दा इस मुक़ाम पर पहुँच जाता है तो अल्लाह तआ़ला उन्हें उन पोशीदा बातों और राज़ों पर मुत्तलाअ़ फ़रमाता है जो वो नहीं जानते थे–

और वली की एक अ़लामत ये भी है कि जिसे देखने से अल्लाह याद आ जाये।

मज़्कूरा तमाम दलाइल व आयाते कुरान की रोशनी में ये बात बाज़ेह तौर साबित हुई कि औलिया-ए-किराम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम) से करामात का ज़हूर होता है जैसे-अम्बिया-ए-किराम (अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम) से मोजिज़ात का ज़हूर हुआ है और ये अहले सुन्नत के कामिल औलिया-ए-किराम, उसूल-ए-फ़िक़ा के बड़े-बड़े उ़ल्मा, फुक़हा और मुहद्दिसीन का मज़हब है और मशरिक़ व मग़रिब और अ़रब व अ़जम में इनकी किताबों में इस बात की सराहत मौजूद है और मोजिज़ाह और करामत में फ़र्क़ ये है कि मोजिज़ाह नबी और रसूल से सादिर होता है और करामत वली से सादिर होती है औलिया-ए-किराम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम) से करामातों के सुदूर पर कुरान मजीद और बकसरत अहादीस मुबारका में दलाइल मौजूद हैं और औलिया-अल्लाह की करामातों का इन्कार गोया कुरआन व अहादीस से इन्कार है।

-: औलिया अल्लाह ज़िन्दा हैं :-

बाज़ बद अक़ीदा लोग ये कहते हैं कि बुजुर्गों के मज़ारात पर जाकर मुर्दों को पुकारना नाजाइज़ व शिर्क है हालाँकि उनके पास दलाइल के नाम पर सिर्फ ज़ाती राय व ज़ाती क़ियास और जाहलियित की सोच से सादिर होने वाले बे बुनियादी ख़यालात के सिवा कुछ भी नहीं हैं जबकि कुरान व अहादीस के दलाइल से सराहतन ये बात साबित और आशकार है कि मुर्दों को पुकारना जाइज़ है और अल्लाह तआ़ला के तमाम अम्बिया-किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) और तमाम औलिया-किराम व सूफ़िया-इज़ाम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम) तो ज़िन्दा हैं और हमेशा ज़िन्दा रहेंगे इनसे आ़लमे अतराफ़ व अकनाफ़ के लोग मुस्तफ़ीज़ व मुस्तफ़ीद होते हैं और वो सुनते भी हैं और जवाब भी देते हैं और हाजत र'वाई भी करते हैं और मौत एक ज़ायक़ा है और रुह को कभी मौत नहीं आती और इनके अलावा वफ़ात पाये हुऐ हर आम व ख़ास को पुकारना जाइज़ है जो कि कुरान व अहादीस से साबित है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है-

सो तुम चार परिन्दे पकड़ लो फिर उन्हें अपनी तरफ़ मानूस (पसंद) कर लो फिर (उन्हें ज़िब्हा करके) उनका एक एक टुकड़ा एक एक पहाड़ पर रख दो फिर उन्हें पुकारो वो तुम्हारे पास दौड़ते हुए आ जायेंगे।
(सू०-बक़राह-260)

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने किसी ज़िन्दा, व मुर्दा, ग़ायब, व हाज़िर, दूर, व नज़दीक, यानी किसी को पुकारने की कोई क़ैद नहीं लगाई है और कुरान व अहादीस में इसकी कहीं पर भी मुमानियत वारिद नहीं है और इसको शिर्क व नाजाइज़ कहने वालों के दलाइल व अ़क़ाइद सब बातिल हैं

हज़रत सालेह और हज़रत शुऐब (अ़लैहिमुस्सलाम) ने अपनी क़ौम को उनकी हलाकत के बाद पुकारा–

हज़रत सालेह (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) का क़िस्सा सूरह०–आअ़राफ़ में इस तरह बयान हुआ है–

पस मुताकब्बिर लोग कहने लगे बेशक जिस (चीज़) पर तुम ईमान लाये हो हम उसके सख़्त मुन्किर हैं पस उन्होंने ऊँटनी को (काट कर) मार डाला और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और कहने लगे ऐ सालेह तुम वो (अ़ज़ाब) हमारे पास ले आओ जिसकी तुम हमें वई़द सुनाते थे अगर तुम (वाक़ई) रसूलों में से हो सो उन्हें सख़्त ज़लज़ले (के अ़ज़ाब) ने आ पकड़ा पस वो (हलाक होकर) सुबह अपने घरों में औंधें पड़े रह गये फिर (सालेह अ़लैहिस्सलाम ने) उनसे मुँह फेर लिया और कहा ऐ मेरी क़ौम बेशक मैंने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचा दिया था और नसीहत भी कर दी थी लेकिन तुम नसीहत करने वालों को पसन्द ही नहीं करते।
(सू०–आअ़राफ़–76–ता–79)

हज़रत शुऐब (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) का क़िस्सा इसी सूरह०–आअ़राफ़ में कुछ आगे यूँ इस तरह बयान हुआ–

पस उन्हें शदीद ज़लज़ले (के अ़ज़ाब) ने आ पकड़ा सो वो (हलाक हो कर) सुबह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये जिन लोगों ने शुऐब (अ़लैहिस्सलाम) को झुठलाया (वो ऐसे नेस्त व नाबूद हो गये) गोया वो उस (बस्ती) में (कभी) बसे ही न थे जिन लोगों ने शुऐब (अ़लैहिस्सलाम) को झुठलाया (हक़ीक़त में) वही नुक़सान उठाने वाले हो गये तब (शुऐब अ़लैहिस्सलाम) उनसे किनारा कश हो गये और कहने लगे ऐ मेरी क़ौम बेशक मैंने तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुँचा दिये थे और मैंने तुम्हें नसीहत भी कर दी थी फिर मैं काफ़िर क़ौम (के तबाह होने) पर अफ़सोस क्यों करूँ।
(सू०–आअ़राफ़–91–ता–93)

मज़्कूरा दोनों आयतों से मालूम हुआ कि दोनों पैगम्बरों ने ये ख़िताब अपनी क़ौम से उनकी हलाकत के बाद किया था।

अल्लाह तआ़ला के मक़बूल व मख़्सूस बन्दे दूर से भी हमारी पुकार को सुनते हैं ख़्वाह नूरे नबूवत से या नूरे विलायत से और हमारी हाजत र'वाई भी करते हैं और कुरान खुद फ़रमा रहा है कि अल्लाह के बरगुज़ीदा बन्दे दूर से भी सुनते हैं और जवाब भी देते हैं और वो हाजत र'वा और मुश्किल कुशा भी हैं।

फ़रमाने ख़ुदा वन्दी है–

(ऐ हबीब) आप उन रसूलों से पूछें जो रसूल हमने आप से पहले भेजे कि क्या हमने (खुदाये) रहमान के सिवा कोई और माअ़बूद बनाये थे कि उनकी परस्तिश की जाये।
(सू०–ज़ुख़्रुफ़–45)

इस आयते करीमा पर ग़ौर करो कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के ज़माने में साबिक़ीन अम्बिया (अ़लैहिमुस्सलाम) वफ़ात पा चुके थे मगर रब तआ़ला फ़रमा रहा है ऐ महबूब उन वफ़ात याफ़्ता रसूलों से पूछो कि क्या कोई खुदा के सिवा कोई और माअ़बूद है और पूछा उससे जाता है जो सुन भी ले और जवाब भी दे तो माअ़लूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला के मख़्सूस बन्दे बाद वफ़ात सुनते भी हैं और बोलते भी है जिस तरह मेअ़राज की रात तमाम वफ़ात याफ़्ता रसूलों ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के पीछे नमाज़ पढ़ी।

–: हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) का क़ब्र वालों से मुख़ातिब होना :–

हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) जब क़ब्रों पर तशरीफ़ ले जाते तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह

वसल्लम) फ़रमाते ऐ मोमिनों तुम पर सलाम है और ऐ मुसलमानों तुम पर सलाम है और ऐ मुसलामानों के घर वालो तुम पर सलाम है और अल्लाह तआ़ला ने चाहा तो हम तुमसे मुलाक़ात करेंगे तुम हमसे आगे गये हो और हम तुम्हारे पीछे हैं मैं अल्लाह तबारक व तआ़ला से सलामती चाहता हूँ तुम लोगें के वास्ते और अपने वास्ते। (नसाई–3/661–ह०–2044)

–: हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम का बदर के मक्तूलीन से खिताब :–

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते है कि हम हज़रत ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के हमराह थे मक्का और मदीना के माबैन फिर आपने हमें अहले बदर के मुताअ़ल्लिक़ हदीस बयान फ़रमाई पस उन्होंने फ़रमाया कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने हमें कुफ़्फ़ार के साथ लड़ाई शुरु होने से एक रोज़ पहले दूसरे रोज़ क़त्ल होने वाले कुफ़्फ़ारों की जाए हलाकत दिखा रहे थे और आप फ़रमाते जाते थे कि इन्शा अल्लाह कल ये फुलां काफ़िर का मक़्तल होगा और ये फुलां के क़त्ल होने की जगह है हज़रत ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं उस ज़ात की क़सम जिसने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) को हक़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया उन कुफ़्फ़ारों के मुताअ़ल्लिक़ आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने जो जगह मुतइयन फ़रमाई थी वो उन हुदूद से ज़रा भी इधर उधर न गिरे फिर उनको एक दूसरे के ऊपर बदर के कुऐ में डाल दिया गया फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) चले हत्ता कि उनके पास पहुँच गये और फ़रमाया ऐ फुलां इब्ने फुलां क्या तुमने उस वायदे को पा लिया जो अल्लाह ने और उसके रसूल ने तुम्हारे साथ किया था तहक़ीक़ कि मैंने उस वायदे को हक़ पाया जो–

जो अल्लाह तआ़ला ने मेरे साथ किया है हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप इन मुर्दा कुफ़्फ़ारों के साथ कैसे कलाम फरमां रहे हैं जिनके अन्दर रुह नहीं है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया जो कुछ भी मैं इनसे कह रहा हूँ तुम इन मुर्दा कुफ़्फ़ारों से ज़्यादा नहीं सुन रहे।
(बुख़ारी सही–4/202-ह०–4026, व 2/126-ह०–1370)
(मुस्लिम–सही–6/403-ह०–7222)
(अबू दाऊद–सुनन–3/172-ह०–2681)
(इब्ने हिब्बान–सही–7/501-ह०–6498)

–: अम्बिया (अ़लैहिमुस्सलाम) अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं :–

हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जुमाअ़ के दिन मुझ पर कसरत से दुरुद भेजा करो क्योंकि ये योमे मशहूद (हाज़िर होने का) दिन है इस दिन फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और जब कोई भी शख़्स मुझ पर दुरुद भेजता है तो उसके फ़ारिग़ होने से पहले उसका दूरुद मुझ पर पेश कर दिया जाता है हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) कहते हैं मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) आपकी वफ़ात के बाद हमारा दुरुद आप पर किस तरह पेश होगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– अल्लाह तबारक व तआ़ला ने ज़मीन के लिये हराम कर दिया कि वो अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) के जिस्मों को खाये।
(अबू दाऊद–सुनन–2/204-ह०–1531)
(इब्ने माजा–सही–1/554-ह०–1636)
(नसाई–सुनन–1/525-ह०–1377)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/328-ह०–2582)

-: हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम हर सलाम का जवाब देते हैं :-

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया-कोई भी शख़्स मुझ पर सलाम भेजता है तो बेशक मैं उसके सलाम का जवाब देता हूँ क्योंकि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने मेरी रुह लौटा दी हुई है।
(अबू दाऊद-सुनन-2/560-ह०-2041)
(अहमद बिन हम्बल-अल मुस्नद-2/527-ह०-10827)
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-2/217-ह०-1581,4161)

-: अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे क़ब्रों में ज़िन्दा होते हैं :-

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि एक सहाबी ने एक क़ब्र पर खेमा लगाया ये न जानते हुये कि यहाँ क़ब्र है फिर अचानक पता चला कि ये क़ब्र है और उसमें सूरह मुल्क़ पढ़ी जा रही है यहाँ तक कि पढ़ने वाले ने उसे ख़त्म कर लिया वो सहाबी नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सारा हाल बयान किया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया-ये सूरत अ़ज़ाबे क़ब्र को रोकने वाली और उससे निजात देने वाली है (तिर्मिज़ी-सुनन-2/548-ह०-2890)
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-2/495-ह०-2510)

- मुर्दा जूतों की आवाज़ सुनता है -

हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया-कि बन्दे को जब उसकी क़ब्र में रखा जाता है और उसके साथी जब लौटते हैं तो वो उनके जूतों की आवाज़ को सुनता है।

(बुख़ारी–सही–1/462-ह०–1308 व 1/448-ह०–1673)
(मुस्लिम–सही–4/2200-ह०–2870)
(अबू दाऊद–सुनन–4/238-ह०–4752)
(नसाई–सुनन–4/97-ह०–2051)
(अहमद बिन हम्बल–अल मुस्नद–3/126-ह०–12293)

मज़कूरा कुरान व अहादीस की रोशनी व दलाइल से ये बात साबित हुई कि वफ़ात पाये हुये तमाम आम व ख़ास और अम्बिया–किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) व औलिया–किराम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम) को पुकारना और अल्लाह तबारक व तआ़ला के मुक़र्रिबीन और मख़सूस बन्दों से मदद व हाजत तलब करना जाइज़ है।

अल्लाह तबारक व तआ़ला के तमाम अम्बिया–किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) व शुहदा–किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) और औलिया–किराम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम) ज़िन्दा हैं और वो अल्लाह तबारक व तआ़ला की तरफ़ से रिज़्क़ पाते हैं और उ़म्मते मुस्लिमा के हाजत र'वा और उनकी निजात का ज़रिया हैं अम्बिया–किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) व औलिया–किराम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम) और नेक सालिहीन बन्दे अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं इस मौज़ूअ़ पर हमारी ताअ़लीफ़ कर्दा किताब ''हयातुननबी'' इन्शा अल्लाह अ़नक़रीब मन्ज़रे आम पर होगी इस किताब में अल्हम्दु लिल्लाह मैंने अम्बिया–किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) व औलिया–किराम (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम) के अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा होने की कुरान व अहादीस के दलाइल से तफ़सीली गुफ़्तगू तहरीर की है।

-: शाने औलिया अहादीस की रोशनी में :-

– बन्दा नवाफ़िल के ज़रिये अल्लाह का कुर्ब पाता है –

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- कि अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया है कि जिसने मेरे किसी वली से दुश्मनी की उसके ख़िलाफ़ मेरी तरफ़ से ऐलाने जंग है और मेरा बन्दा मुसलसल नवाफ़िल के ज़रिये मेरा कुर्ब हासिल करता है यहाँ तक कि मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूँ फिर मैं उसके कान बन जाता हूँ जिसके साथ वो सुनता है और मैं उसकी आँख बन जाता हूँ जिसके साथ वो देखता है और मैं उसका हाथ बन जाता हूँ जिसके साथ वो पकड़ता है और मैं उसके पाँव बन जाता हूँ जिसके साथ वो चलता है अगर वो मुझसे सवाल करे तो मैं ज़रुर उसे अ़ता फ़रमाता हूँ अगर वो मुझसे पनाह का तालिब हो तो मैं उसे पनाह देता हूँ मोमिन मौत की तकलीफ़ को पसंद नहीं करता और मुझे भी उसको तकलीफ़ देना अच्छा नहीं लगता।

(बुख़ारी-सही-6/84-ह०-6502)
(बैहक़ी-सुनन कुबरा-10/219 -व-2/269-ह०-696)
(इब्ने हिब्बान-सही-2/58-ह०-347)

मज़कूरा हदीसे मुबारका से हमें औलिया-अल्लाह की शानो अ़ज़मत व क़दरो मन्ज़िलत का पता चलता है कि उनकी शानो अ़ज़मत बहुत बुलन्द व बाला है और उनकी शानो अ़ज़मत का ये आ़लम कि अल्लाह के वालियों से बुग्ज़ व अ़दाबत रखना गोया अल्लाह तबारक व तआ़ला से बुग्ज़ व अ़दाबत रखना है क्योंकि हदीसे मुबारका के अल्फ़ाज़ इस बात पर दलालत करते हैं कि जो अल्लाह के वलियों से दुश्मनी रखे तो अल्लाह तआ़ला उस दुश्मनी रखने वाले से जंग का ऐलान कर रहा है और इस हदीसे मुबारका-

से ये भी माअ़लूम हुआ कि अल्लाह के औलिया कुर्बे इलाही के अ़ज़ीम मन्सब पर फ़ाइज़ होते हैं और ये हदीसे मुबारका इस बात पर भी दलालत करती है कि औलिया-अल्लाह के तवस्सुल से जो हाजत तलब की जाये वो बारगाहे खुदावन्दी में मक़बूल होती है क्योंकि अल्लाह तअ़ाला ज़रिया-ए-रसूल इस हदीस में खुद फ़रमां रहा है कि औलिया-अल्लाह रब तअ़ाला से जो तलब करते या जो सवाल करते हैं तो अल्लाह तअ़ाला उन्हें अ़ता फ़रमाता है

और ये हदीसे मुबारका इस बात पर भी दलालत करती है कि ख़्वातीन का औलिया-अल्लाह की मज़ारात की ज़ियारत करना जाइज़ व बाइसे ख़ैर है क्योंकि औलिया-अल्लाह हमा वक़्त ख़ास कुर्बे इलाही में रहते हैं और जब उनके जिस्मी अ़ाज़ा जैसा कि इस हदीस में मज़कूर है कि अल्लाह तअ़ाला फ़रमा रहा है कि मैं उनके पाँव बन जाता हूँ जिससे वो चलता है और मैं उनके हाथ बन जाता हूँ जिससे वो पकड़ता है और मैं उनकी आँखे बन जाता हूँ जिससे वो देखता है तो जिसकी आँखें नूरे इलाही से देखती हों तो उस वली-अल्लाह के सामने ख़्वातीन का किसी भी हाल में जाने में कोई क़बाहत नहीं और जो आँखें अल्लाह के नूर से मुनव्वर हों उन आँखों के सामने ख़्वातीन का जाना कैसे नाजाइज़ हो सकता है

और इस हदीसे पाक से ये भी मालूम हुआ कि अल्लाह तबारक व तअ़ाला अपने वलियों से मुहब्बत करता है और मुहब्बत का तक़ाज़ा ये होता है कि जब अल्लाह मुहिब हो और बन्दा मेहबूब हो तो फिर उस बन्दे के मक़ाम और मरातिब का अ़ालम क्या होगा जिसे हर अ़क़्ल समझने पर क़ासिर है और अल्लाह तबारक व तअ़ाला अपने औलिया को वो सब कुछ अ़ता फ़रमाता है जिसका वो तालिब होता है फिर उन औलिया-अल्लाह से आम व ख़ास और मर्द व अ़ौरत सब फ़ैज़याब होते हैं।

- हज़रत उवैस क़रनी की शानो अ़ज़मत -

हदीस न०-1- हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया-ताबईन में एक बेहतरीन शख़्स है जिसे उवैस कहते हैं उसकी एक माँ है (जिसकी देखभाल में वो मसरुफ़ रहता है) और उस (के एक हाथ) पर सफ़ेदी भी है सो तुम (उसके पास जाना और) अपने लिये मग़फिरत की दुआ़ के लिये उससे कहना।
(मुस्लिम-सही-6/181-ह०-6491)
(अहमद बिन हम्बल-अल मुस्नद-1/38-ह०-266)
(हाकिम-अल मुस्तदरक-3/456-ह०-5720)
(देलमी-अल फिरदौस-2/177-ह०-2886)
(बैहक़ी-शुअबुल ईमान-5/219-ह०-6798)

हदीस न०-2- उसैर बिन जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने से रिवायत है कि कूफ़ा के लोग हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास आये और उनमें से एक शख़्स था जो उवैस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मज़ाक़ किया करता था (क्योंकि वो नहीं जानता था कि ये अल्लाह के वली हैं और उवैस अपना हाल छुपाते थे (और आ़रिफ़ों का यही तारीक़ा होता है) तो हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने कहा कि यहाँ क़िरन का भी कोई शख़्स है तो वो शख़्स बोला हाँ तब हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने उससे फ़रमाया कि मुझसे हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया था-कि यमन में एक शख़्स है जिसका नाम उवैस है उसको बर्स (सफ़ेद दाग़) की सफ़ेदी होगी तो उसने अल्लाह से दुआ़ की तो अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उसकी सफ़ेदी उसके बदन से दूर कर दी सिवाये एक दिरहम के पस तुममें से जो कोई उसको मिले तो अपने लिये उससे दुआ़ कराये। (मुस्लिम-सही-6/180-ह०-6490)

हदीस न०-3- हज़रत उसैर बिन जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास यमन से जब भी लोग आते तो वो उनसे पूछते कि तुम में कोई उवैस बिन आ़मिर नाम का कोई शख़्स है यहाँ तक कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) खुद उ़वैस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास आये और उनसे पूछा कि तुम्हारा नाम उवैस बिन आ़मिर है उन्होंने कहा हाँ फिर पूछा तुम क़िरन से हो उन्होंने कहा हाँ फिर पूछा कि तुमको बर्स था वो अच्छा हो गया मगर अब दिरहम बराबर बाक़ी है उन्होंने कहा हाँ फिर पूछा तम्हारी माँ है उन्होंने कहा हाँ तब हज़रत-उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने कहा-

कि मैंने रसुलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से सुना है कि आप फ़रमाते थे कि यमन में एक शख़्स है जो क़िरन का रहने वाला है और उसका नाम उवैस बिन आ़मिर है उसको बर्स था मगर अच्छा हो गया मगर अब दिरहम बराबर बाक़ी है और उसकी एक माँ है वो उसके साथ नेकी करता है और उसका हाल ये है कि अगर वो अल्लाह तबारक व तआ़ला के भरोसे पर क़सम खा ले तो अल्लाह तआ़ला उसको सच्चा करदे फिर अगर हो सके तो उससे अपने लिये दुआ़ कराना तो आप मेरे लिये दुआ़ फरमां दें फिर उवैस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने हज़रत उ़मर के लिये बख़्शिश की दुआ़ फ़रमाई फिर हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने उनसे पूछा कि आप कहाँ जाने का इरादा रखते हैं उन्होंने जवाब दिया कि मैं कूफ़ा जाने का इरादा रखता हूँ तब हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने उनसे कहा कि मैं कूफ़ा के हाकिम के नाम आपके लिये ख़त लिख देता हूँ उन्होने कहा कि मुझे ख़ाकसारों में रहना अच्छा मालूम होता है।
(मुस्लिम-सही-6/181-ह०-6492)

बातिल अ़क़ीदा और मनफ़ी सोच रखने वाले लोगों को इन अहादीसे मुबररका से इ़बरत लेना चाहिये कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) का ये फ़रमाना कि उवैस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से दुआ़ कराना ये इस बात की तरफ़ इशारा है कि औलिया अल्लाह की दुआ़ बारगाहे खुदावन्दी में जल्द और ज़रुर कुबूल होती हैं और औलिया अल्लाह को अपनी दुआ़ में वसीला बनाना दुआ़ के मक़बूल हाने का बाइस है और इस हदीस से ये भी मालूम हुआ कि औलिया अल्लाह मक़ामे विलायत के उस मन्सब पर फ़ाइज़ हाते हैं कि अगर वो अल्लाह तआ़ला के भरोसे क़सम खा लें तो अल्लाह तआ़ला उसे सच्चा कर देता है।

– अम्बिया औलिया को देखकर रश्क करेंगे –

हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया- बेशक़ अल्लाह तआ़ला के कुछ ऐसे बरगुज़ीदा बन्दे हैं जो न अम्बिया-किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) हैं न शुहदा-किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) हैं लेकिन क़यामत के दिन अम्बिया-किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) और शुहदा-किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) उनको अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अ़ता कर्दा मक़ाम व मरातिब व मनाज़िल को देखकर वो उन पर रश्क करेंगे सहाबा-किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) आप हमें उनके बारे में बताऐं कि वो कौन लोग हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया-वो ऐसे लोग हैं जिनकी वाहमी मुहब्बत सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के ख़ातिर होती है न कि रिश्तदारों और न माली लेन देन की वजह से और अल्लाह तआ़ला की क़सम उनके चेहरे नूर होंगे और वो पुर नूर होंगे उन्हें कोई ख़ौफ़ न होगा जब लोग ख़ौफ़ ज़दा होंगे और उन्हें कोई ग़म न होगा जब लोग ग़म ज़दा होंगे फिर

आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने ये आयत तिलावत फ़रमाई–अला इन्ना औलिया अल्लाहि ला ख़ौफुन अ़लैहिम वलाहुम यहज़नून० (सू०–यूनुस–62)
(ख़बरदार बेशक़ औलिया अल्लाह पर न कोई ख़ौफ है और न वो रंजीदा व ग़मगीन होंगे)।
(अबू दाऊद–सुनन–4/770-ह०–3527)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/225-ह०–2390)
(नसाई–सुनन कुबरा–6/36-ह०–11236)
(बैहक़ी–शुअबुल ईमान–6/486-ह०–8998)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया–अल्लाह तआ़ला के कुछ बन्दे ऐसे हैं जो अम्बिया नहीं हैं लेकिन अम्बिया–किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) व शुहदा–किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) उन पर रश्क करेंगे अर्ज़ किया गया कि वो कौन लोग हैं ताकि हम उनसे मुहब्बत करें तो आप तो (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया–कि वो ऐसे बन्दे हैं जो आपस में किसी क़रावतदारी और वास्ता के बग़ैर महज़ अल्लाह तआ़ला की ख़ातिर मुहब्बत करते हैं उनके चेहरे पुर नूर होंगे और वो नूर के मिम्बरों पर जलवा अफ़रोज़ होंगे और उन्हें कोई ख़ौफ न होगा जब लोग ख़ौफ ज़दा होंगे और उन्हें न कोई ग़म होगा जब लोग ग़मज़दा होंगे फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने ये आयत तिलावत फ़रमाई– ख़बरदार बेशक औलिया अल्लाह पर न कोई ख़ौफ़ है और न वो रंजीदा व ग़मगीन होंगे।
(इब्ने हिब्बान–सही–2/332-ह०–573)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–10/495-ह०–6110)
(बैहक़ी–शुअबुल ईमान–6/485-ह०–8997,8999)
(मुन्ज़री–अत्तरग़ीब वत्तरहीब–4/12-ह०–4580)

– जिन्हें देखने से अल्लाह याद आ जाये –

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) से औलिया–अल्लाह के मुताअ़ल्लिक़ सवाल किया गया तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– कि वो लोग जिन्हें देखने से अल्लाह याद आ जाये (वो औलिया अल्लाह हैं)
(नसाई–सुनन–कुबरा–6/362-ह०–11235)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–10/78)
(इब्ने माजा–सुनन–3/352-ह०–4119)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) हमारे बेहतरीन हम नशीन कौन लोग हैं तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– वो लोग जिनका दीदार तुम्हें अल्लाह की याद दिलाये और जिसकी गुफ़्तगू तुम्हारे इल्म में इज़ाफ़ा करे और जिसका अ़मल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाये।
(अबू यआला–अल मुस्नद–4/326-ह०–2437)
(अबू नुऐम–हिलयातुल औलिया–7/46)
(मुन्ज़री–अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/63-ह०–163)
(कंजुल उ़म्माल–9/28,37-ह०–24764,24820)

➡ हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) फ़रमाते थे क्या मैं तुझसे बयान न करूँ उन लोगों का हाल जो अल्लाह के बेहतर बन्दे हैं अ़र्ज़ किया गया क्यों नहीं या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) बयान फ़रमाइये– तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– तुममें से बेहतर वो लोग हैं कि जब उनको कोई देखे तो अल्लाह याद आ जाये।
(इब्ने माजा–सुनन–3/352-ह०–4119)

– अल्लाह के ज़िक्र की कुंजियाँ –

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया यक़ीनन बाज़ लोग अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र की कुंजियाँ हैं उन्हें देखकर अल्लाह तआ़ला याद आ जाता है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–10/205-ह०–10476)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–1/455-ह०–499)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–10/78)

– अल्लाह के वली गर्द आलूद होते –

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया–कितने ही लोग ऐसे होते हैं जो परेशान हाल और बाल गुबार आलूदा दरवाज़ों पर से धकेले हुये (जो परागन्दा हाल जिन्हें दरवाज़ों से धुतकार दिया जाता है) (मगर अल्लाह तआ़ला के नज़दीक उनका ये मक़ाम होता है कि) अगर वो किसी मुआ़मले में अल्लाह तआ़ला की क़सम खालें तो अल्लाह तआ़ला उसे ज़रुर पूरा फ़रमां देता है।
(मुस्लिम–सही–6/231-ह०–6682,6/391-ह०–7190)
(यानी खुदा के नज़दीक वो मक़बूल हैं और दुनियाँ के नज़दीक हक़ीर हैं)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– कितने ही बिखरे बालों वाले गुबार आलूदा फटे पुराने कपड़ों वाले (जो बारगाहे खुदावन्दी में मक़बूल) होते हैं मगर जिन्हें लोग हकारत की नज़र से देखते हैं अगर वो अल्लाह तबारक व तआ़ला पर क़सम खालें तो

अल्लाह तआ़ाला उन्हें उसमें सच्चा कर दे हज़रत बरा बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) भी उन्हीं में से हैं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/759-ह०–1788)
(इब्ने हिब्बान–सही–7/487-ह०–6483)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/487-ह०–861)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/294-ह०–10482)

– अल्लाह के लिये खुश व नाराज़ –

हज़रत अ़म्र बिन हमिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– बन्दा उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त को नहीं पा सकता जब तक कि वो अल्लाह के लिये बुग्ज़ न रखे और अल्लाह के लिये (किसी से) राज़ी न हो और जब उसने ये काम कर लिया तो उसने ईमान की हक़ीक़त को पा लिया और बेशक़ मेरे अहवाब और औलिया वो लोग हैं कि मेरा ज़िक्र करने से वो याद आ जाते हैं और उनका ज़िक्र करने से मैं याद आ जाता हूँ।
(अहमद बिन हम्बल–अल मुस्नद–3/430-ह०–15634)
(तबरानी–अल मुअ़जम औसत–1/203-ह०–651)
(देलमी–अल फ़िरदौस–5/152-ह०–7789)
(मुन्ज़री–अत्तरग़ीब वत्तरहीब–4/14-ह०–4589)

– हज़रत उस्मान ने फ़रमाया यहाँ एक नेक दफ़न होगा –

हज़रत मालिक फ़रमाते हैं कि हज़रत उस्मान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) को शहीद किया गया फिर आपको दफ़न करने का इरादा किया जब उनका जनाज़ा उठाया और एक बाग़ में लाया गया तो हज़रत मालिक फ़रमाते हैं कि हज़रत उस्मान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) इससे पहले इस बाग़ के पास से गुजरे थे और फ़रमाया था कि यहाँ एक नेक आदमी को दफ़न किया जायेगा। (चुनाँचा आप खुद वहाँ दफ़न किये गये)

(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/123-ह०–107)
(इब्ने असाकर–तारीख़ दमिश्क़–39/532)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/95)

– हज़रत उस्मान का ख़्वाब –

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हुमा) रिवायत करते हैं कि हज़रत उस्मान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने एक दिन सुबह के वक़्त फ़रमाया–कि मैंने आज रात को ख़्वाब में हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की ज़ियारत की और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– ऐ उस्मान आज का रोज़ा हमारे पास अफ़्तार करोगे सो उस दिन हज़रत उस्मान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने रोज़ा रखा और उसी दिन आपको शहीद कर दिया गया।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/214-ह०–4554)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–6/181-ह०–30510,3051)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–7/232)
(इब्ने असाकर–तारीख दमिश्क़–39/384)

– हज़रत मौला अ़ली का क़िले का दरवाज़ा उठाना –

हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि जब सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को अपना झण्ड़ा देकर ख़ैबर की तरफ़ र‘वाना किया तो हम भी उनके साथ थे जब हम क़िला ख़ैबर के पास पहुँचे जो मदीना मुनव्वरा के क़रीब है तो ख़ैबर वाले आप पर टूट पड़े आप बेमिसाल बहादुरी का मुज़ाहरा कर रहे थे कि अचानक आप पर एक यहूदी ने चोट करके आपके हाथ से ढ़ाल गिरा दी इस पर हज़रत मौला अ़ली ने क़िले का एक–

दरवाज़ा उखेड़ कर उसे अपनी ढ़ाल बना लिया और उसे ढ़ाल की हैसियत से अपने हाथ में लिये जंग में शरीक रहे बिल आख़िर दुश्मनों पर फ़तह हासिल हो जाने के बाद उस ढ़ाल नुमा दरवाज़े को अपने हाथ से फेंक दिया इस सफ़र में मेरे साथ सात आदमी और भी थे और हम सब आठ के आठ मिलकर उस दरवाज़े को उलटने की कोशिश करते रहे लेकिन हम वो दरवाज़े को न उलट सके (जिसे हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने तन्हा उखेड़ा था)
(अहमद बिन हम्बल–अल मुस्नद–10/1013-ह०–24359)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–6/152)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने बयान किया है कि ग़जवा ख़ैबर के रोज़ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने क़िला ख़ैबर का दरवाज़ा उठा लिया यहाँ तक कि मुसलमान क़िले पर चढ़ गये और उसे फ़तह कर लिया और ये आज़मूदाह (आज़माई हुई) बात है कि उस दरवाज़े को चालीस आदमी मिलकर ही उठाते थे।
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–6/374-ह०–32139)
(अस्क़लानी–फ़त्हुलबारी–7/478)

– अल्लाह के वली जन्नत के बादशाह हैं –

मुआ़ज़ बिन जबल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– क्या मैं तुझसे बयान न करुँ कि जन्नत का बादशाह कौन है मैंने अर्ज़ किया जी हाँ बयान फ़रमाइये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया–जो शख़्स कमज़ोर नातवाँ (ज़ईफ़) हो और लोग उसको कम समझें और दो पुराने कपड़े पहने हुआ हो वो अगर अल्लाह के भरोसे क़सम खाले तो अल्लाह तआ़ला उसको सच्चा कर देगा।
(इब्ने माजा–सुनन–3/351-ह०–4115)

– जन्नत व दोज़ख़ के लोग कौन हैं –

हज़रत हासिर बिन वहब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया–क्या मैं तुझको न बतलाऊँ कि जन्नत के लोग कौन हैं तो अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) फ़रमायें कि वो कौन लोग हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया हर एक ज़ईफ़ नातवाँ (कमज़ोर) जिसको लोग हक़ीर ख़्याल करते हैं अगर ऐसे लोग अल्लाह तआ़ला के भरोसे पर क़सम खालें तो अल्लाह तआ़ला उनकी क़सम को सच्चा कर दे क्या मैं न बतलाऊँ दोज़ख के कौन लोग हैं हर एक सख़्त मिजाज़ बहुत रुपया जोड़ने वाला और बदख़ुल्क़ और अक्कड़ (तकब्बुर करने) वाला।
(बुख़ारी–सही–6/154-ह०–6657)
(इब्ने माजा–सुनन–3/351-ह०–4116)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/382-ह०–2605)

– जिन लोगों पर रश्क करना चाहिये –

हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया–सबसे ज़्यादा जिन लोगों पर रश्क करना चाहिये मेरे नज़दीक़ वो मोमिन हैं जो हल्का फुल्का हो और नमाज़ में उसको राहत मिलती हो और वो लागों में पोशीदा हो और लोग उसकी परवाह न करते हों और उसका रिज़्क बमुश्किल ज़िन्दगी बसर करने के मुताबिक़ हो और उसकी मौत जल्दी वाक़ेअ़ हो जाये उसका माले विरासत भी कम हो और उस पर रोने वाले थोड़े हों।
(इब्ने माजा–सुनन–3/351-ह०–4117)

हिस्सा दोम

ख़्वातीन का ज़ियारते कुबूर जाइज़ है

- ख़्वातीन का ज़ियारते कुबूर -

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमातीं हैं कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से अ़र्ज़ किया कि मैं ज़ियारते कुबूर के वक़्त क्या कहूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- तुम कहो कि सलाम हो अहले दयार मोमिनों और मुसलमानों पर और अल्लाह और हमारे अस्लाफ़ (अगले वक़्तों के लोग) पर और बाद में आने वालों पर रहम फ़रमां और हम इंशा अल्लाह तुम्हारे साथ मिलने वाले हैं।
(नसाई-सुनन-3/659-ह०-2041)
(मुस्लिम-सही-2/416-ह०-2256)

क़ब्र के नज़दीक सलाम करना यानी ख़िताब करना ये इस बात पर दलालत करता है कि ख़िताब उसे से किया जाता है जो कि सुनने की सलाहियत रखता हो और समझने की भी सलाहियत रखता हो और मज़कूरा हदीस इस बात पर भी दलालत करती है कि ख़्वातीन का ज़ियारते कुबूर करना हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) की सुन्नत है बशर्ते दाएरा-ए-हुदुदे शरीअ़त में हो यानी ख़्वातीन पर्दा नशीन हो कर ज़ियारते कुबूर व औलिया-अल्लाह के मुक़द्दस मज़ारात पर जायें इसमें कोई क़बाहत नहीं और इस हदीस ने उन लोगों के अक़वाल की भी नफ़ी कर दी है जो ख़्वातीन को ज़ियारते कुबूर व औलिया-अल्लाह के मज़ारात पर जाने और उनकी ज़ियारत करने को मना करते हैं और नाजाइज़ का फ़तवा देते हैं।

- हुक्मे ज़ियारते कुबूर -

हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि-

हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- मैंने तुमको ज़ियारते कुबूर से मना किया था पस अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत किया करो। (इब्ने माजा की रिवायत में इतना इज़ाफ़ा है कि क्योंकि इससे दुनियाँ से बेरग़बती और आख़िरत की याद हासिल होती है) (ओर अबू दाऊद में इतना इज़ाफ़ा है कि ये तुम्हें मौत की याद दिलाती है)
(इब्ने माजा-सुनन-1/531-ह०-1571)
(अबू दाऊद-सुनन-3/583-ह०-3235)
(मुस्लिम-सही-2/418-ह०-2260)
(तिर्मिज़ी-सुनन-1/580-ह०-1054)

मज़कूरा हदीसे मुबारका में आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने तमाम उम्मते मुस्लिमा को ये हुक्म फ़रमाया कि वो क़ब्रों की ज़ियारत किया करें क्योंकि वो मौत और आख़िरत की याद दिलाती हैं और दुनियाँ से बेरग़बत करती हैं और आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने इस हुक्म में किसी गिरोह या जमाअ़त को ख़ास नहीं फ़रमाया बल्कि ये हुक्म उम्मत के तमाम अफ़राद को शामिल है ख़्वाह मर्द हो या औ़रत सभी के लिये ये हुक्म है कि वो क़ब्रों की ज़ियारत किया करें और अल्लाह के रसूल के हुक्म का इन्कार हद्दे कुफ़्र है और खुली नाफ़रमानी व गुमराही की अ़लामत है।

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) के बेटे हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) के भाई हज़रत अ़ब्दुर्रहमान ने मक्का के क़रीब हुमीला में वफ़ात पाई और उनको मक्का में दफ़न किया गया फिर उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने उनकी क़ब्र की ज़ियारत की।
(तिर्मिज़ी-सही-1/581-ह०-1055)
(बैहक़ी-सुनन कुबरा-5/141-ह०-7207)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु)

से रिवायत है फ़रमाते हैं कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) एक औ़रत के पास से गुज़रे जो क़ब्र के पास रो रही थी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने उससे फ़रमाया कि अल्लाह से डर और सब्र से काम ले। (इस हदीस में भी ख़्वातीन को ज़ियारते कुबूर से मना नहीं फ़रमाया गया बल्कि ज़ियारते कुबूर की रुख़सत दी गयी है) (बुख़ारी–सही–2/66-ह०–1252,1283)
(बैहक़ी–सुनन–कुबरा–5/142-ह०–7208)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबू मुलैका फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हा) क़ब्रिस्तान की तरफ़ से तशरीफ़ ला रहीं थीं तो मैंने अ़र्ज़ किया ऐ उम्मुल मोमिनीन आप कहाँ से तशरीफ़ ला रहीं हैं तो आपने फ़रमाया कि मैं अपने भाई अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र की क़ब्र पर गई थी तो मैंने अ़र्ज़ किया कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने क़ब्रों की ज़ियारत से मना फ़रमाया था तो आपने फ़रमाया कि पहले मना फ़रमाया था लेकिन बाद में इजाज़त दे दी थी। (बैहक़ी–सुनन कुबरा–5/141-ह०–7207) (हाकिम–1/753-ह०–1392)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने क़ब्रों की ज़ियारत में हमें रुख़सत दी है।
(इब्ने माजा–सुनन–1/531-ह०–1570)

➡ ख़ातूने जन्नत हज़रत सय्यदा फ़ातिमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) हर जुमआ़ा के रोज़ अपने चचा हज़रत हमज़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) की क़ब्र की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले जातीं और उनके लिये दुआ़–ए–मग़फ़िरत करती और आँसू बहातीं। (बैहक़ी–सुनन–कुबरा–5/142-7208)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्निफ़–3/572-ह०–6713)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/754-ह०–1396)

मज़्कूरा तमाम अहादीस व दलाइल से साबित हुआ कि ख़्वातीन का क़ब्रों की ज़ियारत करना जाइज़ है और जो लोग ओ़रतों का क़ब्रों की ज़ियारत करना हराम और फ़ेअ़्ले लाअ़्नती कहते हैं और उन अहादीस को बतौर-दलील पेश करते हैं जो अहादीस उस वक़्त की हैं जब मुत्लक़न क़ब्रों की ज़ियारत की मुमानियत थी यानी आम व ख़ास और मर्द व ओ़रत सभी के लिये क़ब्रों की ज़ियारत करने की मुमानियत थी फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने ज़ियारते कुबूर की रुखसत दी जैसा कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया मैं तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से मना करता था लेकिन अब मैं तुम्हें इजाज़त देता हूँ कि क़ब्रों की ज़ियारत के लिये जाया करो क्योंकि ये तुम्हें आख़िरत की याद दिलाती हैं इस हदीस में किसी (मर्द या ओ़रत) को ख़ास नहीं किया गया बल्कि ये हुक्म मर्द व ओ़रत सभी के लिये है अगर ये हुक्म सिर्फ़ मर्दों के लिये ख़ास होता तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) इस तरह फ़रमाते कि सिर्फ़ मर्द क़ब्रों की ज़ियारत किया करें क्योंकि ये आख़िरत की याद दिलाती हैं तो मालूम हुआ कि क़ब्रों की ज़ियारत करना हुक्मे रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) है और ये सुन्नते रसूल और सुन्नते उम्मुल मोमिनीन है और तमाम मर्द व ओ़रत सभी के लिये इसमें रुख़सत है और क़ब्रों की ज़ियारत करना बाइसे अज्र और ख़ैर है क्योंकि ये मौत और आख़िरत की याद दिलाती हैं और दुनियाँ से बे रग़बत करती हैं।

– ईदगाह में ओ़रतों का जाना –

हज़रत हफ़्सा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि अगर हम में से किसी के पास अगर चादर न हो तो क्या उसके लिये इसमें कोई हर्ज है कि वो (नमाज़े ईदैन के लिये) बाहर न निकले तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया-उसकी साथी ओ़रत को चाहिये कि अपनी चादर का कुछ हिस्सा उसे भी उढ़ा दे फिर वो

ख़ैर के मवाकैअ़ (मौकों) पर और मुसलमानों की दुआ़ओं में शरीक हों (यानी ईदगाह जायें) उम्मे अ़तीया (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमातीं हैं कि मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) को फ़रमाते हुये सुना है कि जवान लडकियाँ पर्दा बालियाँ और हाइज़ा औरतें भी बाहर निकलें और मवाकैअ़ ख़ैर में और मुसलमानों की दुआ़ओं में शरीक हों और हाइज़ा औरतें जाये नमाज़ से दूर रहें हज़रत हफ़्सा कहती हैं कि मैंने पूछा क्या हाइज़ा भी तो उन्होंने फ़रमाया– क्या वो अराफ़ात में और फुलां–फुलां जगह नहीं जातीं यानी जब वो इन जुमला मुक़द्दस मक़ामात पर जाती हैं तो फिर ईदगाह में क्यों न जायें।

(बुख़ारी–सही–1/406-ह०–324)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/340-ह०–539)
(नसाई–सुनन–1/593-ह०–1561)

➡हज़रत उम्मे अ़तीया (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि हमें हुक्म दिया गया कि हम ईदैन के मौक़े पर हाइज़ा और परदा नशीन औ़रतों को बाहर लायें ताकि वो मुसलमानों की जमाअ़त और उनकी दुआ़ओं में शरीक हों अलबत्ता जो औ़रतें अइयामे (हैज़) वाली हों वो नमाज़ की जगह से अलग रहें एक औ़रत ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह हम में से किसी को चादर मयस्सर नहीं होती है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– उसके साथ जानी वाली उसको अपनी चादर में ले ले।

(बुख़ारी–सही–1/289-ह०–351)
(मुस्लिम–सही–2/349-ह०–2056)
(अबू दाऊद–सुनन–1/799-ह०–1136)
(नसाई–सुनन–1/594-ह०–1562)

➡ हज़रत हफ़्सा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि उम्मे अ़तीया (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया–

कि नौजवान लड़कियाँ, और पर्दानशीन व हाइज़ा औ़रतें जब ईदगाह की जानिब निकलें तो उन्हें चाहिये कि नेकी और भलाई के काम में और मुसलमानों की दुआ़ में शिर्कत करें अलबत्ता जिन ख़्वातीन को हैज़ आ रहा हो उनको चाहिये कि वो मस्जिद से अलग रहें और मस्जिद में दाख़िल न हों लेकिन बाहर से वो दुआ़ में शामिल रहें।
(नसाई–सुनन–1/169-ह०–392)

– रात के वक़्त औ़रतों का मस्जिद जाना –

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया– अगर रात के वक़्त तुम्हारी औ़रतें मस्जिद में जाने की इज़ाज़त माँगे तो उन्हें इजाज़त दे दो।
(बुख़ारी–सही–1/542-ह०–865)
(नसाई–सुनन–1/296-ह०–709)

(इजाज़त लेने का मुआ़मला सिर्फ़ मस्जिद के साथ ख़ास नहीं है बल्कि औ़रत को चाहिये कि वो ईदैन और अपने किसी अ़ज़ीज़ की क़ब्र की ज़ियारत के लिये भी अपने शौहर या सरपरस्त से इजाज़त लें इसके अलावा अपने अ़ज़ीज़ व अक़ारिब की मुलाक़ात के लिये जाना वग़ैराह ये सब काम ख़ाविन्द या सरपरस्त की इजाज़त पर मौक़ूफ़ हैं)

– औ़रतों का बीमार पुर्सी के लिये जाना –

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया कि हज़रत बिलाल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) और सय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को बुखार हो गया मैं उन दोनों के पास मिजाज पुर्सी के लिये) गई।
(बुख़ारी–सही–5/427-ह०–5654)

– ईदैन में औ़रतों को खुत्बा देना –

हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) व हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने ईदुल फ़ित्र के पहले नमाज़ पढ़ी फिर लोगों पर खुत्बा पढ़ा और जब फ़ारिग़ हुये तो ख़्याल फ़रमाया कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) का खुत्बा औ़रतों ने नहीं सुना फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) उनके पास आये और उनको नसीहत की और सद्क़े का हुक्म दिया और बिलाल अपना कपड़ा फैलाये हुये थे और औ़रतों में से कोई अंगूठी डालती थी कोई छल्ला और कोई हार और कोई कुछ रावी ने कहा मैंने अ़ता से पूछा कि ये सद्क़ा फ़ितरा था उन्होंने कहा नहीं ये सद्क़ा था मैने अ़ता से कहा कि अब भी इमाम पर वाजिब है कि औ़रतों के पास जायें जब खुत्बे से फ़ारिग़ हों और उन्हें नसीहत करें तो उन्होंने कहा क्यों नहीं बेशक़ इमामों का हक़ है कि औ़रतों के पास जायें और खुदा जाने उन्हें क्या हो गया कि अब वो इस पर अ़मल नहीं करते।
(मुस्लिम–सही–2/346-ह०–2045,2047)

– ख़्वातीन को मस्जिद जाने से न रोकने का हुक्म –

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हुमा) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया– कि तुम्हारी औ़रतें जब मस्जिद में जाना चाहें तो उन्हें मना न करो (एक दूसरी रिवायत में है तुम अपनी ख़्वातीन को रात के वक़्त मस्जिद जाने से न रोको) (मुस्लिम–सही–2/59-ह०–988)
(मुस्लिम–सही–2/60-ह०–992)
(अबू दाऊद–सुनन–1/454-ह०–566)

– औ़रत का जंग में साथ जाना –

हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हज़रत उम्मे सुलेम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के पास हुनैन के दिन एक खंजर था जब अबू तल्हा ने खंजर देखा तो अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ये उम्मे सुलेम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) हैं और इनके पास एक खंजर है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने पूछा ये खंजर कैसा है तो उम्मे सुलेम ने कहा या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) अगर कोई मुशरिक मेरे पास आया तो मैं इस खंजर से उसका पेट फाड़ डालूँगी ये सुनकर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) मुस्कुरा दिये। (मुस्लिम–सही–5/104-ह०–4680)

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) उम्मे सुलेम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) और चन्द अन्सार की औ़रतों को जिहाद में अपने साथ रखते थे वो पानी पिलाती और ज़ख़्मों की दवा करती थीं। (मुस्लिम–सही–5/104-ह०–4682)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि बेशक़ हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) जिहाद में औ़रतों को साथ ले जाया करते थे ताकि वो जख़्मों की दवा करती थीं और पानी पिलाती थीं और उनको कुछ इनआ़म मिलता था और हिस्सा भी।
(मुस्लिम–सही–5/105-ह०–4684)
(अबू दाऊद–सुनन–3/79-ह०–2531)

➡ हज़रत उम्मे अ़तीया (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैं नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के साथ कई लड़ाइयों में साथ रही हूँ मैं मर्दो के

ठहरने की जगह में रहती थी और उनका खाना पकाती थी और ज़ख़्मों की दवा करती थी और बीमारों की ख़िदमत किया करती थी।
(मुस्लिम–सही–5/109-ह०–4690)

– औ़रतों का ज़रुरत के लिये घर से निकलना –

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया कि – उम्मुल मोमिनीन हज़रत सोदा बिन्ते ज़मआ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) रात के वक़्त बाहर निकलीं तो हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने उन्हें देखा और पहचान गये फिर कहा अल्लाह की क़सम ऐ सोदा तुम हमसे छुप नहीं सकती हो तो जब हज़रत सोदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के पास वापस आयीं तो उन्होंने आपसे इस बात का ज़िक्र किया जबकि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) उस वक़्त मेरे घर में शाम का खाना तनावुल फ़रमां रहे थे और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के हाथ में गोश्त वाली एक हड्डी थी उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) पर नुजूले वही का आगाज़ हुआ जब ये कैफ़ियत ख़त्म हुई तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें इजाज़त दी है कि तुम अपनी ज़रुरियात के लिये बाहर जा सकती हो।
(बुख़ारी–सही–5/198-ह०–5237)
(मुस्लिम–सही–5/341-ह०–5668)

– एक एतराज़ और उसका जवाब –

बाज़ लोग दर्जे ज़ैल हदीस को ख़्वातीन के ज़ियारते कुबूर पर बतौर दलील ग़लत तरीक़े और कुछ तब्दीलियों के साथ पेश करते हैं और कहते हैं कि औ़रतों का क़ब्रों की ज़ियारत करना और मज़ाराते औलिया अल्लाह की ज़ियारत करना नाजाइज़ है।

– औ़रत घर से निकलती है तो शैतान ताकता है –

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया–औ़रत को पर्दा ज़रुरी है फिर जब वो बे पर्दा निकलती है तो शैतान उसको ताकता है यानी ताकि उस बे पर्दा औ़रत के सबब से लोगों को फ़ित्ने में डाले।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/645-ह०–1173)

जवाब– अगर इस हदीस से औ़रत के घर से निकलने पर शैतान का ताकना मुराद लिया जाये तो फिर औ़रत का घर से निकलना मुत्लक़न नाजाइज़ हो जायेगा फिर तो औ़रत हमेशा के लिये घर में क़ैद रहेगी और वो कहीं भी आ जा नहीं सकती जबकि मज़कूरा हदीस पाक में बे पर्दा औ़रतों को घर से निकलने की मुमानियत फ़रमायी गयी है और इस हदीसे पाक में नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने उन औ़रतों की मज़म्मत फ़रमायी है जो अपने घरों से बे पर्दा निकलती हैं और उन्हें शैतान ताकता है यानी पर्दा नशीन औ़रत अपने ख़ाविन्द या सरपरस्त की इजाज़त से घर से बाहर कहीं भी जा सकती है उसके लिये शरीअ़त ने कोई क़ैद मुतय्यन नहीं फ़रमाई है लेकिन बाज़ मौलवी अपनी कम इल्मी और बे हिकमती ओर अपनी मनमानी के सबब ख़्वातीन को मज़ाराते औलिया–अल्लाह–

की ज़ियारत से मना करते हैं और इसके नाजाइज़ होने का फ़तवा देते हैं जबकि उनका ऐसा कहना अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की खुली नाफ़रमानी व गुमराही और अहादीस से इन्हिराफ़ है इसके अलावा बाज़ मौलवियों को ये भी कहते सुना गया कि वो कहते हैं कि औ़रत जब औलिया-अल्लाह के मज़ारात की ज़ियारत के लिये जब घर से निकलती है और जिस बुजुर्ग की मज़ार की ज़ियारत का वो इरादा करती है तो उन बुजुर्ग को वो औ़रत नंगी दिखाई देती है मआ़ज़ अल्लाह अस्तग़फिरुल्लाह ये उनकी जाहिलाना सोच और बद अ़कीदगी और ला इ़ल्मी को ज़ाहिर करता है

जबकि हदीसे कुदसी है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है कि मैं अपने मुक़र्रब वली के कान बन जाता हूँ जिसके साथ वो सुनता है और मैं उसका हाथ बन जाता हूँ जिसके साथ वो पकड़ता है और मैं उसके पाँव बन जाता हूँ जिसके साथ वो चलता है और मैं उसकी आँख बन जाता हूँ जिसके साथ वो देखता है तो अब ये बात तवज्जो तलब है कि जो अल्लाह का वली नूरे इलाही की आँख से देखता हो तो ये कैसे मुम्किन है कि औ़रत उसे नंगी दिखायी दे मआ़ज़ अल्लाह अस्तग़फिरुल्लाह और अगर इस हवाले से उनसे दलाइल पर सवाल किया जाये तो उनके पास उनकी ज़ाती व अ़क़्ली और मनघढ़ंत दलील के सिवा कोई दलील नहीं होती और ऐसे लोग अव्वल दर्जे के जाहिल हैं और ऐसे लोग खुद तो गुमराह हैं और उ़म्मते मुस्लिमा को भी गुमराही के तरफ़ ले जा रहे हैं और सुन्नियत के इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ को मुन्तशिर कर रहे हैं जबकि कुरान व अहादीस में इस बात की कहीं पर भी मुमानियत वारिद नहीं है बल्कि मज़कूरा तमाम दलाइल से ये बात साबित होती है कि ख़वातीन पर्दा नशीन होकर अपने खाविन्द या सरपरस्त की इजाज़त से ज़ियारते कुबूर के अलावा घर से बाहर कहीं भी जा सकती हैं। वल्लाहु तआ़ला आ़लम०

हिस्सा सोम

नियाज़ व फ़ातिहा दिलाना सुन्नत है

– हुजूर ने खुद अपने वलीमे में फ़ातिहा दी –

हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) का निकाह हज़रत ज़ैनब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से हुआ तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने मुझसे कहा कि जो मुसलमान तुमको मिले उसे बुला लाओ सो मैंने जो मिला उसे बुला लाया और वो लोग सब दाख़िल होने लगे और खाना खाते जाते थे और निकलते जाते थे आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने अपना मुबारक हाथ खाने पर रखा और दुआ़ की और पढ़ा उस खाने पर जो अल्लाह तआ़ला ने चाहा और मैंने भी जो मुझे मिला किसी को न छोड़ा बुला लाया और सबने खाया यहाँ तक कि सब सेर हो गये।
(मुस्लिम–सही–4/53-ह०–3508)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) रिवायत करते हैं कि जब उम्मुल मोमिनीन हज़रत सय्यदा ज़ैनब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) की इद्दत पूरी हो गई (यानी ज़ैद के तलाक़ देने के बाद) तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसललम) ने ज़ैद से फ़रमाया– कि उनसे मेरा ज़िक्र करो वो उनके पास गये और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसललम) का पैग़ामे निकाह दिया उन्होने जवाब में फ़रमाया मैं कोई काम बग़ैर मशवरे से नहीं करती जब तक मैं अपने परवरदिगार से मशवरा नहीं ले लेती हूँ (यानी इस्तिख़ाराह नहीं कर लेती) और उसी वक़्त वो नमाज़ के लिये खड़ी हो गयीं और कुरान उतरा और आप (सल्लल्लाहु अ़लैह वसललम) उनके पास बग़ैर इज़्न के दाख़िल हो गये यानी ये आयत उतरी–(''यानी याद करो जब आपने उस शख़्स से फ़रमाया जिस पर अल्लाह ने इनआ़म फ़रमाया था

और उस पर आपने भी इनआ़म फ़रमाया था कि तू अपनी बीवी (ज़ैनब) को अपनी ज़ोजियत मे रोके रख और अल्लाह से डर और आप अपने दिल में वो बात पोशीदा रख रहे थे जिसे अल्लाह ज़ाहिर फ़रमाने वाला था और आप (दिल में हया व) लोगों (की ताअ़ना ज़नी) का ख़ौफ़ रखते थे (ऐ हबीब लोगों का ख़ौफ दिल में लाने की कोई ज़रुरत न थी) और फ़क़त अल्लाह ही ज़्यादा हक़दार है कि आप उसका ख़ौफ़ रखें (और वो आप से बढ़कर किसी में भी नहीं है) फिर जब ज़ैद ने उसे तलाक़ देने की ग़रज़ पूरी कर ली तो हमने उससे आपका निकाह कर दिया ताकि मोमिनों पर उनके मुँह बोले बेटों की बीवियों (के साथ निकाह) के बारे में कोई हर्ज न रहे जबकि (तलाक देकर) वो उनसे बे ग़रज़ हो गये हों और अल्लाह का हुक्म तो पूरा किया जाने वाला ही था'' (सू०-अहज़ाब-37)

यानी बियाह दिया हमने ज़ैनब को आपसे रावी बयान करते हैं कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसललम) ने सब लोगों को रोटी और गोश्त खिलाया यहाँ तक कि लोग चले गये और कुछ बाक़ी रह गये जो खाना खाने के बाद बातें करते रहे और फिर ये आयत उतरी- जिसमें परदे का हुक्म भी शामिल है और लोगों को नसीहत की गई- (कि ''ऐ ईमान वालो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसललम) के घरों में दाख़िल न हुआ करो सिवाये इसके कि तुम्हें खाने के लिये इजाज़त दी जाये (फिर वक़्त से पहले पहुँचकर) खाना पकने का इन्तिज़ार करने वाले न बना करो हाँ जब तुम बुलाये जाओ तो (उस वक़्त) अन्दर आया करो फिर जब खाना खा चुको तो (वहाँ से उठकर) फ़ौरन मुन्तशिर हो जाया करो और वहाँ बातों में दिल लगाकर बैठे रहने वाले न बनो यक़ीनन तुम्हारा ऐसे (देर तक बैठे) रहना नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसललम) को तकलीफ़ देता है और वो तुमसे (उठ जाने-

को कहते हुये) शर्माते हैं और अल्लाह हक़ बात कहने से नहीं शर्माता और जब तुम उन (अज़्वाजे मुताह्‌रात) से कोई सामान माँगो तो उनसे पर्दे के बाहर से पूँछा करो ये (अ़दब) तुम्हारे दिलों के लिये और उनके दिलों के लिये बड़ी तहारत का सबब है और तुम्हारे लिये हरगिज़ जाइज़ नहीं कि तुम रसूलुल्लाह को तकलीफ़ पहुँचाओ और न ये (जाइज़) है कि तुम उनके बाद उनकी अज़्वाजे (मुताह्‌रात) से निकाह करो। (सू०–अहज़ाब–53)
(मुस्लिम–सही–4/48-ह०–3502)
(नसाई–सुनन–2/396-ह०–3256)

- दस्तरख़्वान पर फ़ातिहा -

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं कि ग़जबा तबूक के मौक़े पर लोगों को भूख लाहक़ हो गई तो उन्होनें अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) अगर आप हमें इजाज़त दें तो हम अपने ऊँट ज़िब्हा करके खा लें तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- कि ठीक है तुम लोग ऐसा कर लो तो हज़रत ज़ुमर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) ने सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) अगर लोगों ने ऐसा किया तो उनके पास सवारी के जानवर कम हो जायेंगे रावी कहते हैं कि आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने एक दस्तरख़्वान मंगवाया और वो फैला दिया फिर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने लोगों से बच जाने वाले खाने पीने का सामान लाने के लिये कहा रावी कहते है कोई शख़्स मुट्ठी भर जौ ले आया कोई थोड़े से ख़जूर ले आया कोई रोटी का टुकड़ा ले आया फिर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने दस्तरख़्वान पर खाने पीने का थोड़ा-सा बचा हुआ सामान इकट्ठा किया फिर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने उस पर बरकत की दुअ़ा की फिर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया- तुम लोग अपने अपने बरतनों में ड़ालना शुरु करो लोगों ने अपने अपने बरतनों में ड़ालना शुरु किया यहाँ तक कि उन्होंने लश्कर में मौजूद हर बर्तन को भर लिया और उन्होंने सेर होकर खाया फिर भी बाक़ी रह गया।

(बुख़ारी-सही-3/310-ह०-2982)
(मुस्लिम-सही-1/121-ह०-ह०-138)
(इब्ने हिब्बान-सही-7/534-ह०-6530)

– खजूरों पर बरकत की दुआ़ –

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैं चन्द खजूरें लेकर रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसललम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैंने उन्हें अपने दोनों हाथों में रखा हुआ था सो मैंने अ़र्ज़ किया या– रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) आप इनमें मेरे लिये बरकत की दुआ़ फरमां दें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसललम) ने मेरे लिये उनमें बरकत की दुआ़ फ़रमाई फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसललम) ने फ़रमाया– कि जब तुम्हें खजूरें लेनी हो तो अपना हाथ इनके अन्दर दाख़िल करना और मुकम्मल तौर पर इन्हें ख़त्म न कर देना हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) कहते हैं कि मैंने उन खजूरों में से इतने वस्क़ अल्लाह की राह में ख़ैरात किये और हम खुद भी उनमें से खाते थे और दूसरों को भी खिलाया करते थे वो मेरी थैली में मौजूद रहते थे यहाँ तक कि हज़रत उ़स्मान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) (के ख़िलाफ़े बग़ावत) के दिनों में वो मुझसे कहीं गिर गई।

(इब्ने हिबबान–सही–7/536-ह०–6536)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है फ़रमाते हैं कि मैं नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसललम) की ख़िदमत में कुछ खजूरें लेकर हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) इनमें अल्लाह तआ़ाला से बरकत की दुआ़ फ़रमाऐं तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसललम) ने उन्हें इकट्ठा किया और मेरे लिये उनमें दुआ़ऐ बरकत फ़रमाई फिर मुझसे फ़रमाया– इन्हें ले लो और इन्हें अपने तोशादान में रख दो और जब इसको लेना चाहो तो अपना हाथ इसमे ड़ालकर ले लिया करो इसे झाड़ना नहीं सो मैंने

उनमें से इतने-इतने (यानी कई) वस्क़ (एक वस्क़ दो सौ चालीस किलोग्राम के बराबर होता है) खजूरें अल्लाह के रास्ते में ख़र्च की हम खुद उसमें से खाते और दूसरों को भी खिलाते कभी वो तोशादान मेरी कमर से जुदा न हुआ (यानी खजूरें ख़त्म न हुई) यहाँ तक कि जिस दिन हज़रत उस्मान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) शहीद हुये तो वो मुझसे कहीं छूट गया।
(तिर्मिज़ी-सुनन-5/685-ह०-3839)
(अहमद बिन हम्बल-अल मुस्नद-2/352-ह०-8613)
(इब्ने हिब्बान-सही-14/467-ह०-6532)
(इब्ने कसीर-अल विदाया वन निहाया-6/117)
(सयूती-ख़साइसुल कुबरा-2/85)

- सुरीद में बरकत -

हज़रत समुरा बिन जुन्दुब (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में सुरीद (शोरबे में तर की हुई रोटी) का प्याला पेश किया गया तो वो लोगों के सामने रखा गया तो लोग सुबह से लेकर दोपहर तक यके बाद दीगर उसके पास आते रहे कुछ लोग उठते तो दूसरे आकर बैठ जाते एक शख़्स ने हज़रत समुरा से दरयाफ़्त किया क्या वो बढ़ रहा था हज़रत समुरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने फ़रमाया- तुम्हें किस बात पर हैरानी हो रही है वो सिर्फ़ उस तरफ़ से बढ़ रहा था उन्होने अपने हाथ के ज़रिये आसमान की तरफ़ इशारा करके कहा।
(इब्ने हिब्बान-सही-7/533-ह०-6529)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते है मुझ पर तीन दिन ऐसे दिन गुज़रे कि जिनमें मैंने कुछ नहीं खाया मैं सुफ़्फ़ा (के चबूतरे) पर आना चाह रहा था लेकिन मैं गिर गया उस वक़्त सरकारे दो आ़लम-

(सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में एक सुरीद (शोरबे में तर की हुई रोटी) का प्याला पेश किया गया तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने वो खाने के लिये अहले सुफ़्फ़ा को बुलवाया था और वो लोग उसे खा रहे थे मैंने खुद को सीधा करने की कोशिश की ताकि वो लोग मुझे भी दावत दें (लेकिन कुछ नहीं हुआ) यहाँ तक कि वो लोग खाना खाकर उठ गये उस प्याले में सिर्फ़ वो चीज़ बाक़ी रह गई जो प्याले के किनारे पर मौजूद होती है जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने उसे इकट्ठा किया तो वो एक लुक़्मा बन गया फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने वो अपनी उँगलियों में रखा फिर मुझसे फ़रमाया- अल्लाह का नाम लेकर इसे खाओ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) कहते हैं कि उस ज़ात की क़सम जिसके दस्ते कुदरत में मेरी जान है मैं उस एक लुक़्मे को इतनी देर खाता रहा कि मैं सेर हो गया।
(इब्ने हिब्बान–सही–7/537-ह०–6533)

– हज़रत अबू तल्हा के घर खाने में बरकत–

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते है कि हज़रत अबू तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अन्हु) ने (अपनी अहलिया) सय्यदा उम्मे सुलेम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से कहा कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की आवाज़ में नक़ाहत (कमज़ोरी) महसूस की जिससे मुझे अन्दाज़ा हुआ कि आपको भूक लगी है तो क्या तुम्हारे पास कोई चीज़ है (जो खाने के लिये हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम को पेश करूँ) उस खातून ने जवाब दिया जी हाँ फिर उस खातून ने जौ की चन्द रोटियाँ निकाली फिर उन्होंने अपना दुपट्टा लिया और रोटियाँ उसके कुछ हिस्से में लपेट दी फिर मुझे नबी करीम

(सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में भेजा हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मैं वो रोटियाँ लेकर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसललम) के साथ कुछ लोग और भी थे मैं उन लोगों के पास आकर खड़ा हो गया हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने दरयाफ़्त किया क्या तुम्हें अबू तल्हा ने भेजा है मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- क्या खाने के लिये मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैह वसललम) ने अपने पास मौजूद अफ़राद से फ़रमाया- उठो

रावी कहते हैं सब हज़रात र'वाना हो गये और मैं उन हज़रात के आगे चलता हुआ हज़रत अबू तल्हा के पास पहुँचा और उन्हें इस बारे में बताया तो हज़रत अबू तल्हा ने फ़रमाया- ऐ उम्मे सुलेम (रज़िअल्ललाहु तआ़ाला अ़न्हा) हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) लोगों के साथ तशरीफ़ ला रहे हैं और हमारे पास तो इतना खाना नहीं है जो हम उन्हें खिला सकें तो सय्यदा उम्मे सुलेम (रज़िअल्ललाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने जवाब दिया कि अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानते हैं फिर हज़रत अबू तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) तशरीफ़ ले गये और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) से मिले फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) उनके साथ तशरीफ़ लाये यहाँ तक कि दोनों हज़रात घर में दाख़िल हुये फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- ऐ उम्मे सुलेम तुम्हारे पास जो कुछ है उसे पेश करो तो सय्यदा उम्मे सुलेम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) वो रोटियाँ ले आयीं और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के हुक्म के तहत उनके टुकड़े कर दिये गये फिर सइयदा

उम्मे सुलेम ने उस पर वो कुप्पी निचोड़ दी जिसमें घी था वो उसका सालन बन गया फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने उस पर कुछ पढ़ा फिर आपने फ़रमाया कि दस आदमियों को अन्दर आने की इजाज़त दो तो हज़रत अबू तल्हा ने उन्हें अन्दर आने की इजाज़त दी उन लोगों ने खाना खाया यहाँ तक कि जब वो सेर हो गये तो चले गये फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि दस आदमियों को अन्दर आने के लिये कहो यहाँ तक कि उन लोगों ने सेर होकर खाना खा लिया और चले गये फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया दस आदमियों को अन्दर आने के लिये कहो यहाँ तक कि उन सब लोगों ने खाना खा लिया और इस तरह दस-दस अफ़राद आते रहे और खाना खाकर चले जाते थे इस तरह कुल अफ़राद आये और खाना खाकर चले गये उस वक्त कुल अफराद की ताअ़दाद 70 या शायद 80 थी।
(बुख़ारी-सही-3/662-ह०-3578)
(मुस्लिम-सही-5/260-ह०-5316)
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/1026-ह०-3630)
(इब्ने हिब्बान-सही-7/539-ह०-6534)

- एक क़तरा पानी से उगलियों से चश्मा जारी -

हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि हम सफ़र में हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के साथ थे तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ जाबिर लोगों में पुकारो कि वो वुजू करें मैंने आवाज़ दी वुजू करो फिर मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) काफ़िले में एक क़तरा पानी नहीं है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- कि फुलां अन्सारी के पास जाकर देखो कि उसके मशकीज़े में पानी है या नहीं फिर मैं उस अन्सारी की तरफ़ गया और उसके मशकीज़े में देखा कि उसके-

मशकीज़े में एक क़तरा पानी था अगर मैं उस मशकीज़े को उँड़ेलता तो खुश्क़ मशकीज़ा उस एक क़तरे पानी को पी जाता मैं वापस हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के पास आया और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) मैंने उस अन्सारी के मशकीज़े में एक क़तरे पानी के सिवा कुछ न पाया अगर मैं उस मशकीज़े को उँड़ेलता तो खुश्क़ मशकीज़ा उस पानी के एक क़तरे को पी लेता फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसललम) ने फ़रमाया– जाओ और उस मशकीज़े को मेरे पास ले आओ फिर मैं उस मशकीज़े को लेकर आया और उसे अपने हाथ में पकड़ा फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने कुछ पढ़ा पर मैं नहीं जानता कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने क्या पढ़ा फिर आप (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) उस मशकीज़े को अपने हाथ मुबारक से दबाते जाते थे फिर वो मशकीज़ा मुझे अ़ता किया और फ़रमाया–

कि ऐ जाबिर आवाज़ लगाओ कि काफ़िलो में से किसी के पास पानी का बड़ा बर्तन हो तो वो ले आये मैंने आवाज़ लगाई फिर बड़ा बर्तन लाया गया आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने उस मशकीज़े में अपना हाथ मुबारक फेरा और फ़रमाया कि ऐ जाबिर इसे पकड़ो और मेरे हाथों पर "बिस्मिल्लाह" कहकर पानी डालो सो मैंने "बिस्मिल्लाह" कहकर उस मशकीज़े से आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के दस्ते मुबारक पर पानी डाला तो मैंने देखा कि पानी उँगलियों के दरमियान से जोश मार रहा है फिर उस बर्तन ने जोश मारा यहाँ तक कि वो बड़ा बर्तन पानी से भर गया फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– ऐ जाबिर आवाज़ लगाओ कि जिसको पानी की ज़रुरत हो तो आकर पानी ले जाये फिर हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने आवाज़ लगाई

कि लोग आयें और उन्होंने पानी पिया यहाँ तक कि सब सेर हो गये फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने उस मशकीज़े से अपने हाथ मुबारक उठा लिये तो फिर भी वो पानी से भरा हुआ था (यानी मौजूद सभी सहाबा ने पानी पिया और सब सेर हो गये मगर पानी कम न हुआ) (मुस्लिम–सही–6/502-ह०–7519)

मज़कूरा कुरान व अहादीस के दलाइल से साबित हुआ़ कि नियाज़ व फ़ातिहा दिलाना सुन्नत है और जो लोग इस पर ऐतराज़ करते हैं उनका ऐतराज़ बद अक़ीदगी पर मबनी व बे बुनियादी और बातिल है क्योंकि अक्सर मुसलमान जब खाना खाता है या कोई मशरुब पीता है तो खाने और पीने से पहले बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम पढ़ता है फिर खाने और पीने का आगाज़ करता है और बिस्मिल्लाह भी कुरान की एक आयत है तो वाज़ेह हुआ कि हर खाने और पीने की चीज़ों पर कुरान पढ़कर खाना पीना बाइसे ख़ैरो बरकत है और कुरान पढ़कर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की मुक़द्दस बारगाह में नज़र पेश करना या औलिया अल्लाह की बारगाह में नज़र करना या अपने फ़ौत शुदा लोगों की अरवाह को ईसाले सवाब करना ये सब काम बाइसे अज्रो सवाब हैं।

– बुजुर्गों के हाथ, व पाँव, और पेशानी चूमना जाइज़ है –

➡जनाब अ़ब्दुरर्हमान बिन अबू लैला ने बयान किया है कि हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने फ़रमाया कि हम नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के क़रीब हुये और हमने आपके हाथ मुबारक को बोसा दिया।
(अबू दाऊद–सुनन–6/883-ह०–5223)

➡हज़रत सुहैब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) जो कि हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के गुलाम थे रिवायत करते है कि मैंने हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के हाथ और पाँव चूमते देखा और आप साथ–साथ कहते जाते थे कि ऐ चचा मुझसे राज़ी हो जायें।
(बुख़ारी–सही–1/339-ह०–976)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/472-ह०–2733)
(अबू दाऊद–सुनन–6/884-ह०–5225)

➡जनाब शअ़बी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह) से मरवी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) हज़रत जाअ़फ़र बिन अबू तालिब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मिले (जबकि वो सफ़र से वापस आये थे) तो आपने उनसे मुआ़नक़ा किया और उनकी पेशानी पर बोसा दिया।
(अबू दाऊद–सुनन–6/882-ह०–5220)

➡उममुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) व हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम)

की वफ़ात के बाद आपके चेहरे अनवर से कपड़ा हटाया और आप पर झुके और आपकी पेशानी को बोसा दिया और फिर रो दिये और फिर कहा कि मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की क़सम अल्लाह तआ़ला आप पर कभी दो मौतें वारिद नहीं करेगा सिवाये इस मौत के जो अल्लाह तआ़ला ने आप पर लिख दी थी वो आपको आ चुकी और आपकी ज़िन्दगी भी कितनी पाकीज़ा थी और आपकी वफ़ात भी कितनी पाकीज़ा है।
(बुख़ारी–सही–5/455-ह०–5711)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4-667-ह०–6710)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/774-ह०–12195)

दो मौतों से मुराद एक मौत इन्सान जब सोता है तो उसकी रूह बेदार होने तक क़ब्ज़ रहती है जैसा कि फ़रमाने खुदा वन्दी है–ओर वही है जो रात के वक़्त तुम्हारी रुहें क़ब्ज़ कर लेता है–(स०–अनआ़म–60) और दूसरी मौत हक़ीक़ी मौत है जो उसे दोबारा ज़िन्दगी नहीं देती यहाँ तक कि रोज़े क़यामत क़ब्र से उठाया जायेगा लेकिन हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) पर सिर्फ़ एक मौत ज़ाहिरी वारिद हुई क्योंकि आप हालते नींद में भी बेदार रहते थे और फ़रमाते हैं कि मेरे आँखें सोती है और मेरा दिल जागता है यानी आप नींद की हालत में भी बेदार रहते थे और नींद वाली मौत भी आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) पर कभी वारिद नहीं हुई और दूसरी ज़ाहिरी मौत भी आपकी हक़ीक़ी मौत नहीं हैं क्योंकि हदीस पाक में है अम्बिया–किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा है और रिज़्क़ दिये जाते हैं जो कि कुरान व अहादीस से साबित है।

➡ हज़रत आसिम बिन बह्दला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अबू वाइल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) का इन्तिक़ाल हुआ तो हज़रत अबू बुरदा (रज़िअल्लाहु

(रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने आपकी पेशानी पर बोसा दिया। (इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/774-ह०–12196)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने हज़रत उ़स्मान बिन मज़ऊन (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) को बाद वफ़ात बोसा दिया और आप रो दिये यहाँ तक कि आप के आंसू आपके रुख़सार मुबारक पर बह रहे थे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/549-ह०–989)
(अबू दाऊद–सुनन–3/540-ह०–3163)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/669-ह०–6712)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/774-ह०–12193)
(हाकिम–अल मुस्तदरक– 1/725-ह०–1334)

वल्लाहु तआ़ाला आ़लम०

व आखिरूद्अ़वाना अ़निल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन०

★★★

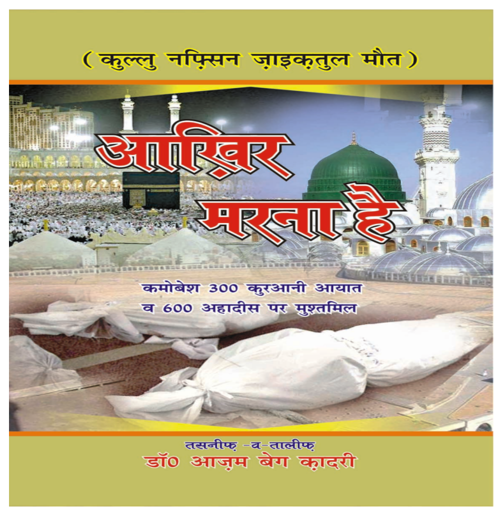

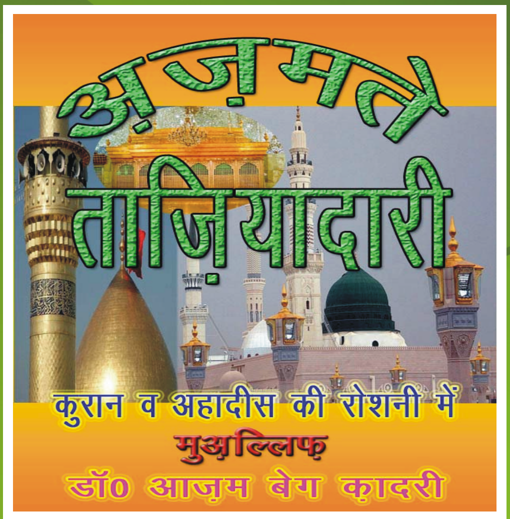

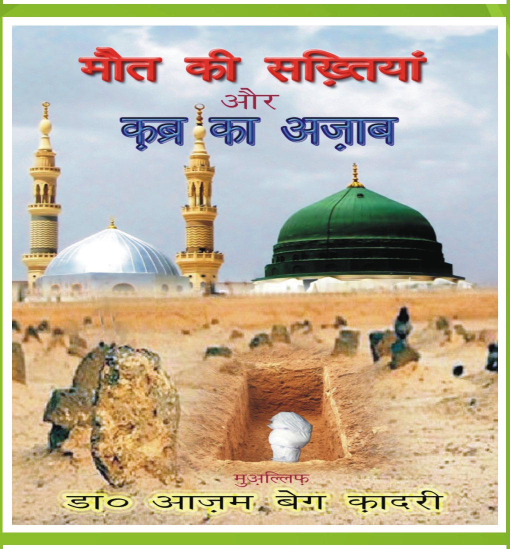

मदार बुक सेलर

मकनपुर (कानपुर) 09695661767